A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 11 जुलाई, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 22, अंक 302, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

चाँद के नुक्ते हैं
फूलों के अक्षर
पत्तियों की मात्राएँ हैं
टहनियों के विराम
नदी की इंक से
हवा के काग़ज़ पर
लिखती हूँ मैं आत्मा का राग
मेरा अंतर्मन ही
लेखक है
प्रकाशक है
वितरक है
मेरी कविताओं का
ये वितरण
प्रेम के रूप में
वितरित हो रहा है।

– सोनरूपा

प्रसंगवश

सीडीएस जनरल चौहान की बात को एक्सपर्ट बड़ी चिंता क्यों मान रहे?

तरजनीश कुमार

भारत के चीफ़ ऑफ डिफ़ेंस स्टाफ़ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने मंगलवार को कहा कि चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के हित एक दूसरे से जुड़े हैं, जिनका असर क्षेत्रीय स्थिरता पर पड़ सकता है। जनरल चौहान ने ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ओआरएफ़) के विदेश नीति सर्वे 2024 के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए ये बातें कही हैं।

'क्षेत्रीय स्थिरता के संदर्भ में जनरल चौहान ने कहा कि म्यांमार में हस्तक्षेप किसी भी लिहाज़ से भारत के हक़ में नहीं होगा। इससे शरणार्थियों का संकट पैदा होगा। इससे भारत के लिए सुरक्षा चुनौती लंबी अवधि के लिए बढ़ सकती है।'

जनरल चौहान ने हिन्द महासागर में भारत के लिए बढ़ती चुनौतियों की ओर भी इशारा किया। उन्होंने चीन का बिना नाम लिए कहा कि वह क़र्ज़ देकर इस इलाक़े में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। जनरल चौहान ने कहा, 'दक्षिण एशिया में लगातार सरकारें बदल रही हैं और इससे भू-राजनीतिक समीकरण बदल रहे हैं। इसी तरह चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के आपस में जुड़े हित भी सुरक्षा चिंता बढ़ा रहे हैं।'

जनरल अनिल चौहान ने कहा, 'ग़लत सूचनाओं का प्रसार, साइबर ख़तरा और डिजिटल स्पेस को हथियार की तरह इस्तेमाल करने की नीति से संघर्ष के नए मोर्चे तैयार हो रहे हैं। भरोसे की कमी और धारणाओं के स्तर पर ज़ोड़-तोड़ भी अहम चुनौतियां हैं। दुनिया दो ध्रुवों से गुज़र रही है। इस शोर में अमेरिकी रुख़ से जटिलता और बढ़ रही है।'

जनरल चौहान ने कहा, 'भारत को अपनी क्षमता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना होगा और साथ में विदेशों में भरोसेमंद साथी भी बनाने होंगे। स्थानीय और वैश्विक विशेषज्ञता के साथ भारत को अपनी क्षमता बढ़ानी होगी। आर्थिक तरक़्क़ी और टेक्नोलॉजी के प्रोत्साहन से ही हम राष्ट्रीय सुरक्षा मज़बूत कर पाएंगे।'

रक्षा विश्लेषक राहुल बेदी कहते हैं कि सीडीएस जनरल अनिल चौहान की चिंताएं बिल्कुल वाजिब हैं और ऑपरेशन सिंदूर के बाद कई चीज़ें स्पष्ट हो गई हैं। पिछले हफ़्ते ही डिप्टी चीफ़ ऑफ आर्मी स्टाफ़ लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने कहा था कि चीन ने भारत के ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान की मदद की थी। पहले 'टू फ्रंट वॉर' कहते थे, लेकिन अब 'वन फ्रंट रीइन्फोर्स्ड वॉर' कहा जा रहा है। यानी एक फ्रंट (पाकिस्तान) से आप सीधा लड़ रहे हैं और दूसरे फ्रंट (चीन) से पाकिस्तान को कई स्तरों पर मदद मिल रही है। पाकिस्तान और चीन के भारत विरोधी गठजोड़ में बांग्लादेश भी शामिल हो गया है। 'सबसे बड़ा ख़तरा है कि बांग्लादेश चीन के साथ मिलकर एक एयरफील्ड पर काम कर रहा है। पूर्वोत्तर भारत को कनेक्ट करने वाला जो चिकन नेक है, उसके लिए ख़तरा बढ़ गया है।'

सिलीगुड़ी कॉरिडोर को ही चिकन नेक कहा जाता है। महज़ 22 किलोमीटर चौड़े इस कॉरिडोर के ज़रिए ही पूर्वोत्तर भारत का बाक़ी भारत से ज़मीन से जुड़ाव है। बांग्लादेश और नेपाल भी इसी कॉरिडोर के साथ सीमा साझा करते हैं। भूटान और चीन भी इस कॉरिडोर से महज़ कुछ किलोमीटर ही दूर हैं। बांग्लादेश लालमोनिरहाट में चीन के सहयोग से बने एक पुराने एयरबेस को फिर से ऑपरेशनल बना रहा है। यह भारत की सीमा से करीब 15 किलोमीटर दूर है और सिलीगुड़ी कॉरिडोर से लगभग 135 किलोमीटर।

स्रोबांग्लादेश को 'इंडिया लॉक्ड' मुल्क कहा जाता है। बांग्लादेश की 94 प्रतिशत सीमा भारत से लगती है। ऐसे में बांग्लादेश सुरक्षा और व्यापार के मामले में भारत पर निर्भर है। वहीं बांग्लादेश से भारत को पूर्वोत्तर के राज्यों में सस्ते और सुलभ संपर्क में मदद मिलती है। पूर्वोत्तर के राज्यों से बाक़ी भारत को जोड़ने में बांग्लादेश की अहम भूमिका है।

थिंक टैंक ओआरएफ़ के सीनियर फेलो मनोज जोशी कहते हैं कि इतनी लंबी सीमा अगर भारत के ख़िलाफ़ होगी तो हम ख़तरे का अंदाज़ा लगा सकते हैं। पिछले महीने ही चीन के कुनमिंग में पाकिस्तान, चीन और बांग्लादेश के बीच एक बैठक हुई थी। इस बैठक में नए क्षेत्रीय गुट के आग़ाज़ की बात हुई है। इसलिए भी जनरल चौहान क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा को लेकर चिंता जता रहे हैं। मनोज जोशी कहते हैं, 'अगर आप सैन्य शक्ति या आर्थिक शक्ति हैं तो पड़ोसी देशों की विदेशी नीति को अपने हिसाब से मोड़ सकते हैं। बांग्लादेश के साथ ऐसा किया जा सकता था। लेकिन भारत न तो सैन्य शक्ति है और न ही आर्थिक शक्ति। अगर हम दोनों में से कोई एक शक्ति भी होते तो पड़ोसी हमारी बात सुनते।'

मनोज जोशी कहते हैं कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद अमेरिका पाकिस्तान को काफ़ी तवज्जो दे रहा है। रूस की दिलचस्पी भी पाकिस्तान में बढ़ रही है।'तो भारत इसे नियंत्रित करने में कहाँ चूक रहा है? मनोज जोशी कहते हैं,' मुझे लगता है कि भारत को आंतकवाद जैसी समस्या का इस्तेमाल घरेलू राजनीति में लामबंदी के लिए बंद करना चाहिए। मोदी सरकार को विदेश नीति को घरेलू राजनीति से अलग रखना चाहिए। हमें दिखावा कम करना होगा और ज़मीन पर ठोस ज़्यादा करना होगा। ऑपरेशन सिंदूर का समर्थन भूटान तक ने नहीं किया। बांग्लादेश में चुनाव बाद क्या होगा, इसका हमें इंतज़ार करना होगा।

रक्षा विश्लेषक उदय भास्कर को लगता है कि सीडीएस जनरल अनिल चौहान ने भारत की जटिल रक्षा चुनौतियों पर अहम मूल्यांकन पेश किया है। चीन अब पाकिस्तान के साथ बांग्लादेश को भी अपने अपने खेमे में लाने में सफल दिख रहा है। शेख़ हसीना के जाने से पहले इस बारे में बहुत सोचा नहीं गया था। जनरल अनिल चौहान ने यह भी कहा है कि अमेरिका का रुख़ बदल रहा है और इससे जटिलता बढ़ी है। अमेरिका पाकिस्तान में हथियारों की आपूर्ति बहाल कर सकता है।

राहुल बेदी कहते हैं, 'पाकिस्तान की लोकेशन को काफ़ी रणनीतिक माना जाता है। इसके अलावा बलूचिस्तान में रेयर अर्थ मिनरल्स हैं और ये सबको चाहिए। ऑपरेशन सिंदूर के बाद तो साफ़ हो गया कि भारत का इसराइल के अलावा किसी ने साथ नहीं दिया। अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने आतंकवाद की निंदा की, लेकिन पाकिस्तान की निंदा नहीं की। यह पाकिस्तान की बड़ी कामयाबी है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान की विश्वसनीयता बढ़ी है।'

राहुल बेदी कहते हैं, 'मुझसे भारत के जाने-माने डिप्लोमैट मुचकुंद दुबे ने कहा था कि भारत बोलता ज़्यादा है लेकिन करता कम है।'

ओपी जिंदल यूनिवर्सिटी में चाइना स्टडीज की प्रोफ़ेसर श्रीपर्णा पाठक भी मानती हैं कि चीन की कोशिश है कि भारत को उसके पड़ोसी देशों से उलझाकर रखे ताकि उसे मैन्युफैक्चरिंग में कोई चुनौती ना मिले।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

गुरुग्राम की सड़कों पर बाढ़ जैसे हालात

● दिल्ली-एनसीआर में तेज बारिश ● नागपुर में घरों में पानी घुसा, रुद्रप्रयाग में पहाड़ टूटा

नई दिल्ली/भोपाल/लखनऊ (एजेंसी)। दिल्ली-एनसीआर में गुरुवार को तेज बारिश हुई। खराब मौसम के कारण 6 फ्लाइट को डायवर्ट किया गया था। 4 फ्लाइट जयपुर भेजी गई और 2 फ्लाइट लखनऊ डायवर्ट की गई। कुछ उड़ानों में देरी भी हुई।

तेज बारिश के कारण दिल्ली की कई सड़कों पर पानी भर गया और घंटों तक ट्रैफिक जाम रहा। गुरुग्राम की सड़कों पर बाढ़ जैसे हालात बन गए। गाड़ियां पानी में तैरती दिखीं। सड़कों पर चल रहे लोगों की कमर के ऊपर तक पानी पहुंच गया।

गुरुग्राम में 90 मिनट में 103 मिमी बारिश हुई। बीते 12 घंटे में 133 मिमी बारिश दर्ज की गई है। गुरुग्राम जिला प्रशासन ने एडवाइजरी जारी कर सभी कॉर्पोरेट ऑफिस और प्राइवेट इंस्टीट्यूट से अपने कर्मचारियों को वर्क फॉर्म होम देने की सलाह दी है।

इधर मप्र के जबलपुर, रीवा, शहडोल, सागर समेत कई जिलों में बाढ़ के हालात हैं। नरसिंहपुर में नदी में बहने से 3 बच्चों की मौत हो गई। वहीं हरियाणा के कैथल में तालाब में नहाने गए 3 बच्चों की डूबने से जान चली गई।

महाराष्ट्र के नागपुर में तेज बारिश के कारण 71 गांवों का जिला मुख्यालय से संपर्क टूट गया है। बोरगांव में 35 साल का युवक उफनते नाले में बह गया। उप्पलवाड़ी में भी 18 साल के लड़के की मौत हुई। नागपुर जिले के सभी स्कूल 9 जुलाई तक बंद हैं।

राजस्थान के सीकर में बस स्टैंड डूबा

राजस्थान के सीकर के फतेहपुर में 90 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई है। तेज बारिश के चलते फतेहपुर में छतरिया बस स्टैंड डूब गया। यहां एक कार और बस फंस गई। इन्हें बचाने के लिए नाव भी चलानी पड़ी।

मप्र के दमोह में पुलिया से लटकी बस

दमोह जिले में ड्राइवर ने तेज बहाव के बीच नाले से बस को पार कराने की कोशिश की। बस अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे लटक गई। बस दमोह से उत्तर प्रदेश के जालौन जा रही थी। पुलिस और स्थानीय लोगों ने बस में सवार 6 यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला।

हिमाचल में मानसून सीजन में अब तक 85 मौतें

हिमाचल प्रदेश में आज ऊना, हमीरपुर, कांगड़ा, मंडी और सिरमौर जिला में हल्की बारिश के आसार है। मानसून सीजन (20 जून से 9 जुलाई) में अब तक 85 लोगों की जान जा चुकी है। इनमें बादल फटने से 15, फ्लैश फ्लड में 8 और लैंडस्लाइड में 1 व्यक्ति की जान गई है।

गजब हाल! धंस गई हाईटेक सिटी की सड़क, गड्ढे में गिरा बीयर से लदा ट्रक

हरियाणा के गुरुग्राम में बारिश के बाद एक चौंकाने वाला मामला प्रकाश में आया है। गुरुग्राम के सेक्टर 70 स्थित एसपीआर रोड अचानक धंस गई और वहां से गुजर रहा ट्रक गड्ढे में ही गिर गया। इस घटना से आसपास खड़े लोगों में अपरातफरी मच गई। उधर, गुरुग्राम के सेक्टर-40 में सड़क धंसने से एक भी कार फंस गई। इसके अलावा कई इलाकों में जलभराव भी हुआ है। वर्षा के बाद नया गुरुग्राम ही नहीं, पुराना गुरुग्राम भी बुरी तरह से प्रभावित हुआ। ओल्ड रेलवे रोड, न्यू रेलवे रोड, दिल्ली रोड और इससे सटे रिहायशी इलाकों में जलभराव की स्थिति बन गई।

महर्षि सांदीपनि की शिक्षा से भगवान श्रीकृष्ण को जगद्गुरु की मिली उपाधि: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महर्षि सांदीपनि आश्रम पहुंचकर की पूजा–अर्चना

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुरू महर्षि सांदीपनि द्वारा प्रदान की गई विद्या से ही भगवान श्रीकृष्ण को विश्व-गुरू की उपाधि मिली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरूवार को गुरु पूर्णिमा पर उज्जैन के महर्षि सांदीपनि आश्रम पहुंचकर भगवान श्रीकृष्ण के गुरु महर्षि सांदीपनि के दर्शन किये और पूजन-अर्चन कर आरती की। पंडित राजेश जोशी ने पूजा अर्चना संपन्न करवायी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर अति प्राचीन श्री कुंडेश्वर महादेव मंदिर पहुंचकर भगवान के दर्शन भी किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वे पिछले कई वर्षों से लगातार गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सांदीपनि आश्रम आकर दर्शन और पूजा अर्चना करते हैं। महर्षि सांदीपनि आश्रम का अतीत अत्यंत गौरवशाली और अद्वितीय रहा है। आज से लगभग 5000 वर्ष पहले भगवान श्रीकृष्ण, श्री सुदामा और श्री बलराम ने यहां आकर महर्षि सांदीपनि से विद्या ग्रहण की थी। भगवान श्रीकृष्ण ने यहां उनके गुरु महर्षि सांदीपनि व्यास से बहुत कम दिनों में 14 विद्या और 64 कलाओं का अध्ययन किया था। एक विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कैसे हो सकता है, इसका इतिहास इसी सांदीपनि आश्रम में रचा गया था। महर्षि सांदीपनि के द्वारा प्रदान की गई विद्या से ही भगवान श्रीकृष्ण को विश्व गुरु की उपाधि मिली। वर्तमान में भारत फिर अपने गौरवशाली अतीत को प्राप्त कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपनी ओर से सभी को गुरु पूर्णिमा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी।इस अवसर पर विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, श्री संजय अग्रवाल, श्री राजपाल सिंह सिसोदिया सहित अधिकारी और नागरिक मौजूद रहे।

भगवान श्री विक्रांत भैरव का पूजन किया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरूवार को उज्जैन में सिंहस्थ के लिए बनाए जा रहे घाटों के निर्माण कार्य का अवलोकन किया। इससे पहले मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरु पूर्णिमा पर भगवान श्री विक्रांत भैरव के मंदिर पहुंचकर दर्शन और पूजन अर्चन किया तथा भगवान से देश प्रदेश की सुख समृद्धि की प्रार्थना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने माता क्षिप्रा को प्रणाम करने के बाद नौका विहार कर सिंहस्थ 2028 में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए किए जा रहे 29 किमी से अधिक लंबे घाट निर्माण कार्यों का जायजा लिया। इन घाटों के निर्माण के बाद सिंहस्थ के दौरान श्रद्धालु सुविधापूर्वक स्नान कर सकेंगे।

अवैध धर्मांतरण के मास्टर माइंड छांगुर बाबा के लिए

शारजाह से स्विस बैंक में भेजे जा रहे थे करोड़ों

लखनऊ (एजेंसी)। अवैध धर्मांतरण के मास्टर माइंड छांगुर बाबा के करीबी नवीन के खातों में स्विस बैंक में करोड़ों के ट्रांजेक्शन हो रहे थे। स्विस बैंक की यह शाखा शारजाह में है। इस शाखा के जरिए ही रकम का ट्रांजैक्शन हो रहा था। एटीएस को छांगुर बाबा और नीतू उर्फ नसरीन की सात दिन की कस्टडी रिमांड मिल गई है। एनआईए कोर्ट ने एटीएस को छांगुर व नसरीन की 10 जुलाई से 16 जुलाई तक की कस्टडी रिमांड दी है।

इस दौरान एटीएस, एनआईए व अन्य खुफिया एजेंसियां छांगुर और नीतू से उनके विदेशी खातों, उन्हें फंडिंग करने वालों व अवैध धर्मांतरण से जुड़ी अन्य पूछताछ करेगी। एटीएस की टीम उन्हें बलरामपुर, महाराष्ट्र लेकर भी जाएगी। वहीं एसपी बलरामपुर विकास कुमार ने कहा है कि छांगुर और उसके गिरोह के सदस्यों के खिलाफ गैंगस्टर ऐक्ट के तहत मामला दर्ज कर उनकी संपत्तियों के जब्तीकरण की कार्रवाई की जाएगी।

ईडी ने भी बलरामपुर पुलिस, एसटीएफ व एटीएस से छांगुर बाबा, उसके गिरोह के करीबी सदस्यों के बैंक खातों, संपत्तियों व करोड़ों के ट्रांजेक्शन से जुड़ा ब्योरा मांगा है। यूपी एटीएस के बाद ईडी भी छांगुर बाबा, नीतू,नवीन और छांगुर के बेटे महबूब को कस्टडी रिमांड पर लेकर या जेल जाकर पूछताछ करेगी। नवीन और नीतू पहले दुबई में साथ में बिजनेस करते थे। वे क्या बिजनेस करते थे, इस बारे में भी पड़ताल की जा रही है। यह भी पता चला है कि छांगुर बाबा ने बलरामपुर में जो जमीन खरीदी गई थी, उस पर वह इस्लामिक दावा सेंटर और मदरसे खोलना चाहता था।

एसटीएफ की जांच बंद करवाने के लिए की थी अपील– छांगुर बाबा के खिलाफ शिकायतें मिलने के बाद जब एसटीएफ को जांच सौंपी गई और एसटीएफ ने बयान दर्ज कराने के लिए उसे नोटिस भेजा तो वह, नवीन और नीतू समेत अन्य लोग एसटीएफ के सामने पेश नहीं हुए। छांगुर ने एसटीएफ की जांच रुकवाने के लिए हाई कोर्ट में अपील की। लेकिन बात नहीं बनी। बाद में जब एफआईआर हो गई तो उसे खारिज कराने के लिए भी हाई कोर्ट में अपील की। लेकिन वहां भी बात नहीं बनी।

दूसरे दिन भी चला बुलडोजर

बलरामपुर में धर्म परिवर्तन कराने के आरोपी जमालुद्दीन उर्फ छांगुर की कोठी पर दूसरे दिन भी अतिक्रमण हटाने का अभियान जारी है। बारिश थमते ही बुधवार को सुबह 11 बजे से बुलडोजर गरजने लगे। एसडीएम राजेंद्र बहादुर ने बताया कि 10 बुलडोजर लगाए गए हैं। पोकलैंड न मिलने से बुलडोजर की संख्या बढ़ाई गई है। सूत्रों के अनुसार छांगुर बाबा की कोठी से 6 जर्मन शेफर्ड कुत?ते और एक घोड़ा भी मिला है।

मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव–इंदौर

आज मुख्यमंत्री डॉ. यादव करेंगे रियल एस्टेट निवेशकों से संवाद

शहरी विकास के ब्लूप्रिंट और भविष्य की योजनाओं पर केंद्रित होगा कॉन्क्लेव

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 11 जुलाई को इंदौर स्थित ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित 'मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव 2025 - सिटीज ऑफ टुमॉरो' का शुभारंभ करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कॉन्क्लेव में होटल, पर्यटन, रियल एस्टेट और इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों के प्रमुख निवेशकों से संवाद करेंगे। यह आयोजन प्रदेश में शहरी विकास के ब्लूप्रिंट और भविष्य की योजनाओं पर केंद्रित रहेगा। इस उच्च स्तरीय आयोजन में देश के 1500 से अधिक निवेशकों, उद्योगपतियों, कॉर्पोरेट प्रतिनिधियों की सहभागिता होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव दोपहर 1.30 बजे कॉन्क्लेव स्थल पर पहुँचकर एक्जीबिशन का अवलोकन करेंगे, उसके बाद विशिष्ट अतिथियों के साथ बैठक करेंगे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 11 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संयुक्त राष्ट्र चिंतित, क्यों बढ़ गया है खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस साल की शुरुआत में एचआईवी/एड्स के खिलाफ वैश्विक लड़ाई को उस वक्त बड़ा झटका लगा जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने एचआईवी रोकथाम और उपचार कार्यक्रमों के लिए विदेशी सहायता निधि रोकने का फैसला किया था। इस कदम ने अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य समुदाय में खलबली मचा दी है, स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कहा अगर इस दिशा में जल्द फिर से विचार न किया गया तो इस महामारी के फिर से उभरने की आशंका हो सकती है। इस विषय पर अब संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि अगर एचआईवी कार्यक्रमों के लिए अमेरिकी धनराशि की भरपाई नहीं की गई, तो 2029 तक लाखों और लोग मौत का शिकार हो सकते हैं।

पिछले छह महीनों में, अमेरिका के एक फैसले ने स्वास्थ्य को व्यवस्थागत झटका दे दिया था, जिसको लेकर संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों ने चेतावनी दी है। उन्होंने आगे कहा कि अगर इस धन की भरपाई नहीं की गई, तो विशेषज्ञों ने कहा साल 2029 तक 40 लाख से ज्यादा एड्स से संबंधित मौतें और 60 लाख से ज्यादा एचआईवी संक्रमण के मामले बढ़ सकते हैं।

2029 तक लाखों लोगों की एड्स से हो सकती है मौत

दशकों से हो रही प्रगति पर फिर जाएगा पानी

यूएनएड्स ने यह भी कहा कि उसे डर है कि अन्य प्रमुख दानदाता भी अपना सहयोग कम कर सकते हैं, जिससे दुनियाभर में एड्स के खिलाफ दशकों से हो रही प्रगति पर पानी फिर सकता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका ने 2025 तक वैश्विक एचआईवी रिस्पॉस के लिए जो 4 बिलियन डॉलर का वादा किया था। ये जनवरी में लगभग रातों रात गायब हो गया जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सभी विदेशी सहायता को निलंबित करने का आदेश दिया और बाद में अमेरिकी एआईडी एजेंसी को बंद करने।

विशेषज्ञों ने जताई चिंता

यूएस स्थित लिवरपूल विश्वविद्यालय में एचआईवी विशेषज्ञ एंड्रयू हिल ने कहा वैसे तो ट्रम्प को अमेरिकी धन को अपनी इच्छानुसार खर्च करने का अधिकार है, हालांकि कोई भी जिम्मेदार सरकार पहले से चेतावनी दे देती है ताकि देश योजना बना सके, बजाय इसके कि रातोंरात क्लीनिक बंद होने पर मरीजो को फंसा दिया जाए।

योगी सरकार की शानदार स्कीम

- यूपी में हर पेड़ से 350 रुपये कमाओ

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए कार्बन क्रेडिट फाइनेंस योजना का सफल क्रियान्वयन कर रही है। यह न केवल प्रदेश में पर्यावरण सरंक्षण के लिए वरदान साबित हो रही

है। साथ ही, किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत भी बन रही है। इस योजना के तहत अब तक 244 लाभार्थी किसानों को 49.55 लाख की राशि वितरित की जा चुकी है। वर्तमान समय में 401 किसानों को 25.45 लाख रुपये की धनराशि वितरित करने की प्रक्रिया की शुरूआत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या धाम में पौधरोपण महाभियान कार्यक्रम के दौरान लाभान्वित किसानों को चेक वितरण कर की।

रांची में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक

रांची (एजेंसी)। पूर्वी क्षेत्रीय अंतरराज्यीय परिषद की 27वीं बैठक गुरुवार को रांची में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में हुई। रांची के एक होटल में चल रही इस बैठक में झारखंड, बिहार, पश्चिम

बंगाल और ओडिशा के बीच अंतरराज्यीय समन्वय से जुड़े कुल 20 एजेंडों पर चर्चा हुई। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी, उपमुख्यमंत्री पार्वती परिदा और मंत्री मुकेश महालिंग, बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी एवं मंत्री विजय चौधरी और पश्चिम बंगाल के वित्त मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य के अलावा चारों राज्यों के कई वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित हैं।

कनाडा में कॉमेडियन कपिल शर्मा के कैफे पर फायरिंग

ओटावा (एजेंसी)। कनाडा में कॉमेडियन कपिल शर्मा के कैफे पर फायरिंग हुई। तीन दिन पहले ही कैफे का उद्घाटन हुआ था। शुरुआती रिपोर्टों के अनुसार, अज्ञात हमलावरों ने कैफे पर कई राउंड गोलियां चलाईं। हालांकि अभी तक किसी के घायल होने की खबर नहीं है।

गुजरात का महिसागर पुल हादसा- नदी से अब तक 16 शव मिले, 3 लोग अब भी लापता

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में वडोदरा और आणंद को जोड़ने वाला पुल टूटने के बाद महिसागर नदी से 16 शव निकाले जा चुके हैं। एनडीआरएफ को गुरुवार सुबह 2 और दोपहर में एक शव मिला, जबकि 13 बॉडी बुधवार को ही बरामद हो चुकी थीं।

हादसे में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत हो गई है। अभी भी 3 लोग लापता बताए जा रहे हैं। इनकी तलाश जारी है।महिसागर नदी पर बना ब्रिज बुधवार सुबह टूट गया था। चलते ट्रैफिक के बीच पुल टूट जाने से दो ट्रक, दो कार और एक रिक्शा नदी में गिर गए थे।

मुख्यमंत्री ने गुरु पूर्णिमा महोत्सव में गुरुजनों का किया सम्मान

सांदीपनि विद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के केन्द्र बनकर उभरे : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुणवत्तापूर्ण और रोजगार परक शिक्षा ही किसी देश की मजबूती का आधार है। बेहतर शिक्षा के बूते ही भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र बनकर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। हमारी वसुधैव कुटुबंकम की भावना से ऋषि-मुनियों के काल में भारतीय ज्ञान से दुनिया के कई देश प्रकाशमान हुए थे। वर्तमान समय में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत का स्वर्णिम काल चल रहा है। मध्यप्रदेश सरकार बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए उन्हें उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा और सभी सुविधाएं प्रदान करने के लिए संकल्पित है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के सभी शिक्षकों एवं छात्रों को गुरु पूर्णिमा महोत्सव की शुभकामानाएं देते हुए कहा कि प्रदेश में 369 सांदीपनि विद्यालय संचालित हो रहे हैं। जहां शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, स्कूल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के केंद्र बनकर उभरे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम के लिए महू, देवास, नरसिंहपुर के

विद्यालयों को बेहतर शैक्षणिक प्रबंधन विकास के लिए 5-5 लाख रुपए देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को कुलगुरु की संज्ञा दी गई है, क्योंकि गुरु ही हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुवार को शासकीय कमला नेहरू सांदीपनि विद्यालय में आयोजित गुरु पूर्णिमा महोत्सव को संबोधित कर रहे थे।

प्रतीक स्वरूप 50 विद्यार्थियों को साइकिल वितरित- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत स्कूली बच्चों को निःशुल्क साइकिल वितरण के 2 दिवसीय अभियान का शुभारंभ करते हुए 50 विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिलें वितरित कीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का विद्यार्थियों ने एक धुन में साइकिल की घंटी बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और मुख्यमंत्री डॉ. यादव का अभिवादन किया। अभियान के पहले दिन विभिन्न जिलों में विद्यार्थियों को 4 लाख 30 हजार साइकिलें बांटी गईं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरु पूर्णिमा के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में गुरुजनों को सम्मानित भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए शिक्षक श्री मनोज सोहनी, श्री देवेंद्र बंसल, डॉ. एस.के. पाल, श्री मनोज कौशल, श्री सुरीत दास बनोथे, श्रीमती शुभांगी नामड़े, श्रीमती सारिका शर्मा, श्रीमती वंदना रामचंदानी, श्री योगेश विश्नोई और श्रीमती बख्तौर खान को अंगवस्त्र एवं श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया।

सीएम ने सुनाई महर्षि सांदीपनि की प्रेरणादायक कथा

उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा के गौरवशाली इतिहास का स्मरण करते हुए शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की नींव बताया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर महर्षि सांदीपनि की प्रेरणादायक कथा सुनाई और बताया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि मूल्यों और चरित्र का निर्माण भी है। उन्होंने कहा, महर्षि सांदीपनि जैसे गुरुओं ने शिक्षा को साधना बनाया था, उसी परंपरा को आगे बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है।

प्रधानमंत्री को 27 देशों का सर्वोच्च सम्मान मिलना देशवासियों को करता है गौरवान्वित

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पिछले दिनों प्रधानमंत्री श्री मोदी को नामीबिया, ब्राजील, त्रिनिदाद और टोबैगो तथा घाना के राष्ट्राध्यक्षों द्वारा अपने देश का प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान दिए जाने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी दुनिया में भारत का गौरव बढ़ा रहे हैं। भारत हर क्षेत्र में विकास करते हुए आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री को 27 देशों का सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिलना 140 करोड़ देशवासियों को गौरवान्वित करता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विरासत के साथ विकास की भावना से प्रदेश के सर्व सुविधायुक्त विद्यालय अब महर्षि सांदीपनि के नाम से पहचान बना रहे हैं। इन विद्यालयों में बच्चों के आवागमन के लिए शासकीय बस सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है।

बिहार में वोटर लिस्ट रिवीजन जारी रहेगा

- चुनाव आयोग को सुप्रीम कोर्ट का निर्देश- आधार, वोटर आईडी, राशन कार्ड को भी पहचान पत्र मानें

पटना (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को बिहार विधानसभा चुनाव से पहले वोटर लिस्ट के रिवीजन जारी रखने की अनुमति दी। अदालत ने इसे संवैधानिक जिम्मेदारी बताया।

सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) यानी वोटर लिस्ट रिवीजन की टाइमिंग पर सवाल उठाए। अदालत ने चुनाव आयोग से कहा कि बिहार में एसआईआर के दौरान आधार, वोटर आईडी, राशन कार्ड को भी पहचान पत्र माना जाए। बेंच के मुताबिक, 10 विपक्षी दलों के नेताओं समेत किसी भी याचिकाकर्ता ने चुनाव आयोग की इस प्रक्रिया पर अंतरिम रोक की मांग नहीं की है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाओं पर चुनाव आयोग से 21 जुलाई तक जवाब मांगा। अगली सुनवाई 28 जुलाई के लिए तय की। विशेष गहन पुनरीक्षण यानी वोटर लिस्ट रिवीजन पर अदालत में करीब 3 घंटे सुनवाई हुई। याचिकाकर्ताओं का आरोप है कि वोटर लिस्ट रिवीजन नियमों को दरकिनार कर किया जा रहा है। वोटर की नागरिकता जांची जा रही है। ये कानून के खिलाफ है। एसआईआर के खिलाफ राजद सांसद मनोज झा, त्रमृष्ट सांसद महुआ मोइत्रा समेत 11 लोगों ने याचिकाएं दाखिल की गई हैं।

न महिला..न ओबीसी.. पीएम मोदी की पहली पसंद को मिल रहा मौका

बीजेपी को जल्द ही मिलेगा नया राष्ट्रीय अध्यक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीजेपी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष का नाम शॉर्टलिस्ट हो जाने की जानकारी है। सूत्रों के अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पांच देशों की एक हफ्ते से अधिक की यात्रा के बाद स्वदेश वापसी का इंतजार हो रहा था। इसके साथ ही गुरुवार को बीजेपी की आंतरिक चुनाव समिति अगले राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव की तारीख घोषित होने की संभावना थी। बीजेपी सूत्र का कहना है कि एक केंद्रीय मंत्री का नाम पार्टी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में लगभग फाइनल हो चुका है, जो पीएम मोदी के भी बेहद करीबी और भरोसेमंद हैं। अभी तक बीजेपी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष को लेकर कई तरह की अटकलें चल रही थीं। लेकिन, अब बीजेपी के अंदरूनी सूत्र ने बताया है कि पार्टी को ऐसा नेता राष्ट्रीय अध्यक्ष के तौर पर मिलने जा रहा है, जो संगठन के आदमी हैं। बीजेपी के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने नाम

नहीं छापने की शर्त पर बताया है कि गुरुवार शाम को पार्टी के राष्ट्रीय चुनाव अधिकारी और ओबीसी मोर्चा के अध्यक्ष डॉ के लक्ष्मण की अगुवाई में एक बैठक हो आयोजित है जिसमें चुनाव तारीख पर औपचारिक मुहर लगेगी।

मनोहर लाल खट्टर का नाम लगभग तय-सूत्र

बीजेपी पदाधिकारी के अनुसार केंद्रीय आवास और शहरी मामले और ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना लगभग तय है। उन्होंने कहा कि '90 प्रतिशत खट्टर ही बन रहे हैं।' वह पीएम मोदी के भी भरोसेमंद हैं और संघ (आरएसएस) भी उनके नाम पर सहमत है। मीडिया भी अपने पहले की रिपोर्ट में खट्टर को एक संभावित उम्मीदवार बता चुका है।

संघ और बीजेपी में काम करने का लंबा अनुभव

71 वर्षीय हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर अभी राज्य की करनाल लोकसभा सीट का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। हरियाणा के रोहतक में जन्मे खट्टर पंजाबी बिरादरी से आते हैं। 2014 में हरियाणा के सीएम बनने से पहले वे बीजेपी के संगठन का ही काम संभाल रहे थे। उससे पहले वे लंबे समय तक आरएसएस के प्रचारक थे। वे 1977 से ही संघ से जुड़ गए और आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेकर खुद को जन सेवा के लिए समर्पित किया।

पंजाब में जम्मू से आई रेलगाड़ी पटरी से उतरी

इंजन समेत 3 डिब्बे डिरेल, 4 बड़ी गाड़ियां लेट, मालवा एक्सप्रेस 3 घंटे से विजयपुर में खड़ी रही

पठानकोट (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर से पंजाब के पठानकोट की तरफ आ रही एक मालगाड़ी गुरुवार सुबह माधोपुर रेलवे स्टेशन के पास पटरी से उतर गई। हादसे में ट्रेन का इंजन और तीन डिब्बे पटरी से उतरे (डिरेल) हैं। गनीमत यह रही कि यह एक मालवाहक ट्रेन थी, जिससे किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई।

रेलवे विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार, भारी बारिश के चलते ट्रैक के नीचे की मिट्टी और पत्थर खिसक गए हैं, जिससे यह रेल लाइन हल्की क्षतिग्रस्त हो गई थी। इसी कारण ट्रेन का संतुलन बिगड़ा और वह पटरी से उतर गई। इसके कारण मालवा एक्सप्रेस, सर्वोदय एक्सप्रेस जैसी 4 सवारी गाड़ियां भी रास्ते में फंसी हुई हैं। रेलवे अधिकारियों ने बताया है कि आज शाम तक ट्रैक को ठीक कर चालू कर दिया जाएगा।

रूट प्रभावित, धीरे-धीरे निकाली जा रहीं ट्रेनें

हादसे के कारण रूट बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इस रूट पर चलने वाली कई बड़ी ट्रेनें लेट हो गई हैं। फिलहाल जम्मू-पठानकोट रेल मार्ग पर एकतरफा यातायात जारी है। वहीं से धीरे-धीरे ट्रेनों को निकाला जा रहा है, लेकिन अधिकतर ट्रेनें समय से लेट हो गई हैं।

ये ट्रेनें लेट हो चुकीं

ट्रैक प्रभावित होने से श्री माता वैष्णो देवी से गाजीपुर जाने वाली ट्रेन लेट हो गई। यह ट्रेन 4 घंटे से बुद्धि रेलवे स्टेशन पर खड़ी है। वहीं, जम्मू तवी से वाराणसी जाने वाली ट्रेन छन्न रेलवे स्टेशन पर 2 घंटे से खड़ी है।

इनके अलावा, मालवा एक्सप्रेस ट्रेन लेट है। इसे जम्मू के ही विजयपुर स्टेशन पर खड़ा किया गया है। वहीं, सर्वोदय एक्सप्रेस भी जम्मू स्टेशन पर खड़ी है। इन ट्रेनों को अब तक आगे बढ़ने की अनुमति नहीं मिली है। बता दें कि इन ट्रेनों से रोजाना हजारों यात्री सफर करते हैं। ट्रेन लेट रहने से लोगों के परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

महाराष्ट्र के स्कूल में पीरियड्स की जांच के लिए उतरवाए गए कपड़े

10वीं की बच्चियों से शर्मनाक हरकत, प्रिंसिपल समेत 8 पर केस

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र पुलिस ने ठाणे के एक प्राइवेट स्कूल के प्रिंसिपल समेत 8 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोप है कि स्कूल में कक्षा 5 से 10 तक की बच्चियों के कपड़े उतरवाकर चेकिंग की गई। 9 जुलाई को पेरेंट्स की शिकायत के

बाद पुलिस ने स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन के 8 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है।

पीरियड्स की चेकिंग के लिए उतरवाए कपड़े- बच्चियों ने अपने पेरेंट्स को बताया कि स्कूल के टॉयलेट में खून के धब्बे मिले थे। जिसके बाद सभी लड़कियों को कन्वेंशन हॉल में बुलाया गया और प्रोजेक्टर पर इसकी तस्वीरें दिखाई गईं। इसके बाद लड़कियों से पूछा गया कि किस-किस को अभी पीरियड्स हो रहे हैं। जिन लड़कियों ने 'हां' में जवाब दिया, उनकी उंगलियों के निशान लिए गए।

पेरेंट्स की शिकायत पर दर्ज हुआ केस

जब बच्चियों ने ये बात घर जाकर पेरेंट्स को बताई तो पेरेंट्स स्कूल के बाहर जमा हो गए और पुलिस के पास जाकर शिकायत की।

अभी तक मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं

मामले की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने स्कूल प्रिंसिपल, 4 टीचर्स एक महिला अटेंडेंट और 2 ट्रस्टीज को गिरफ्तार कर लिया है। इन सभी पर भारतीय न्याय संहिता सेक्शन 74, 76 और पॉक्सो एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। जानकारी के अनुसार, अभी तक इस मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है।

एमपी की महिलाओं ने सुनाई अमित शाह को सक्सेस स्टोरी

धार की रुचिका बोलीं- मैरिज गार्डन शुरू करना है, शाह ने कहा - डिटेल दो, लोन दिलवाएंगे

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सहकारिता मंत्रालय के चार साल पूरे होने पर गुजरात के आणंद में अमूल और नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड के विकास कार्यों का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने देशभर से आई सहकारी समितियों से जुड़ी महिलाओं और सदस्यों से संवाद किया और (प्राथमिक कृषि सहकारी समिति) के विस्तार को लेकर कई अहम बातें कही।

डेयरी और सहकारी विश्वविद्यालय से होगा बड़ा बदलाव: अमित शाह ने कहा कि देश में उत्पादन और अनाजों की बिक्री से जुड़ी दो लाख नई पीएसीएस बनाई जाएंगी। इसके अलावा सहकारी विश्वविद्यालय और डेयरी से जुड़ी तीन नई सहकारी समितियां भी बनाई जाएंगी। इससे देश का सहकारी आंदोलन और मजबूत होगा।

धार की रुचिका परमार ने कहा- संस्था में है 2508 सदस्य, 15 करोड़ का टर्नओवर: धार जिले की नौगांव पीएसीएस की प्रबंधक रुचिका परमार ने बताया कि उनकी संस्था में 2508 सदस्य हैं। हम सालाना लगभग 15 करोड़ रुपये का नकद और खाद वितरण करते हैं। अभी खाद वितरण, समर्थन मूल्य और पीडीएस का काम कर रहे हैं। हमारी संस्था के पास 1 एकड़ अनुपयोगी जमीन है, जिसमें मैरिज गार्डन खोलने का प्रस्ताव रखा है।

अमित शाह ने पूछा - जमीन कितनी है? रुचिका - एक एकड़। शाह ने कहा - जिला सहकारी बैंक से डिटेल लेकर आइए, हम जरूर लोन दिलाएंगे। पीएसीएस

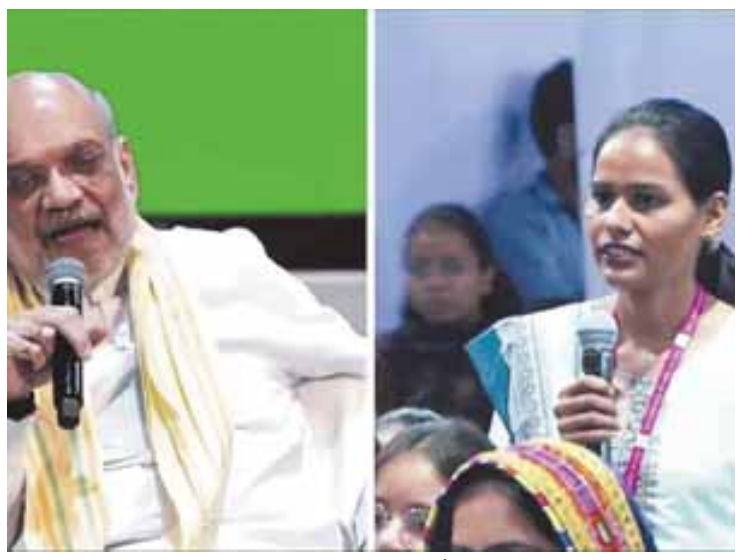

को आय बढ़ाने के लिए नई गतिविधियां अपनानी होंगी। हर घर नल योजना का मेंटेनेंस, सीएससी सेंटर, डेयरी, माइक्रो एटीएम, बैंक मित्र जैसे विकल्प हैं।

शाह ने पूछा - खाद का हिस्सा कितना है?

रुचिका - करीब 3 करोड़। शाह - व्यापार अच्छा कर रही हैं आप। यही दिशा है पीएससीएस की समृद्धि की।

सुदामा अछालिया बोलीं - ड्रिप से 75 प्रतिशत तक बढ़ा मुनाफा: धार जिले के नालछा की किसान सुदामा अछालिया ने कहा कि पहले खेती में मुनाफा नहीं था, लेकिन अब हम मल्चिंग, ड्रिप जैसी आधुनिक तकनीक से टमाटर, मक्का और सोयाबीन की खेती कर रहे हैं। संस्था से बिना ब्याज लोन भी मिलता है।

शाह ने पूछा - मुनाफा कितना बढ़ा सुदामा - 25 प्रतिशत से बढ़कर 75 प्रतिशत हो गया है। शाह - मंडी में भेजने की जगह भारत सरकार के एप पर रजिस्ट्रेशन कराओ, ताकि एमएसपी से ज्यादा रेट मिलने पर आप बाजार में बेचो, कम रेट होने पर सरकार खरीदेगी।

सुदामा का सुझाव - मक्का लगाने की जो नई हाथ से चलने वाली मशीन है, वह अगर सोसाइटी में सब्सिडी पर मिले तो फायदा होगा। शाह ने जवाब दिया - हमने नई योजना शुरू की है, जिसमें पीएससीएस मशीनें लेकर किराए पर किसानों को दे सकती हैं। आप अपने पीएसीएस का नाम भेजिए। रायसेन जिले के सलामतपुर के कुंवर सिंह दांगी ने केन्द्रीय सहकारिता मंत्री को नेपियर ग्रास उत्पादन से होने वाले मुनाफे के बारे में बताया।

रायसेन के कुंवर सिंह बोले - नेपियर घास से किसान को मिल रहा 1 लाख प्रति एकड़ मुनाफा

रायसेन के सलामतपुर पीएससीएम के कुंवर सिंह दांगी ने बताया कि उनकी समिति ने 50 एकड़ में नेपियर घास लगाई है, जिससे किसानों को कम लागत में प्रति एकड़ एक लाख रुपए तक का लाभ मिल रहा है। एक मशरूम कंपनी से टाईअप भी किया है।

शाह ने कहा - आपके बायलॉज में संशोधन हो चुका है, इसलिए अब और भी गतिविधियां कर सकते हैं। जिला सहकारी बैंक के इंस्पेक्टर्स से समझें कि और क्या-क्या किया जा सकता है।

कुंवर - पीएम अन्न भंडारण योजना के तहत 3000 टन का वेयरहाउस बनाने की तैयारी कर रहे हैं।

खरगोन के वीरेंद्र सिंह बोले - जनऔषधि केंद्र से छह महीने में 8 लाख की बिक्री वीरेंद्र सिंह चौहान, खरगोन की समिति के सदस्य हैं। उन्होंने बताया कि उनकी संस्था जनऔषधि केंद्र चलाती है, जहां 50 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक सस्ती दवाएं मिलती हैं। छह महीने में करीब 8 लाख रुपये की बिक्री हुई है।

बदमाश ने कांच के टुकड़े से खुद का गला काटा

पुलिस की मौजूदगी में की वारदात, टीआई पर लगाए हत्या की कोशिश के आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल में राजा खटीक नाम के बदमाश ने खुद का गला काट लिया। उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। राजा खटीक 29 जून को हुए अमित वर्मा हत्याकांड में मुख्य गवाह है।

ये घटना बुधवार रात की छोला मंदिर इलाके की है। जो गुरुवार को सामने आई। इस घटना को लेकर घायल बदमाश राजा खटीक ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी किया है। जिसमें उसने आरोप लगाया कि टीआई सुरेशचंद्र नागर और उनके स्टाफ ने उसका गला काटकर हत्या की कोशिश की है।

पुलिस ने इन तमाम आरोपों को झूठा बताया है। पुलिस का कहना है कि राजा ने पुलिस पर दबाव बनाने की नीयत से खुद ही कांच के टुकड़े से अपना गला काटने की कोशिश की है। राजा के खिलाफ पूर्व में कई आपराधिक केस शहर के अलग-अलग थानों में दर्ज हैं। छोला मंदिर थाने के टीआई सुरेश चंद्र नागर बुधवार देर रात अस्पताल पहुंचे, तब परिजन ने विरोध कर उन्हें अंदर जाने से रोका और पुलिसकर्मियों से बदसलूकी की।

राजा को इसलिए पूछताछ के लिए थाने लाई थी पुलिस

जानकारी के मुताबिक राजा खटीक, अमित वर्मा की हत्या का मुख्य गवाह है। पुलिस की जांच में इस बात का भी खुलासा हुआ था कि मुख्य आरोपी नसीम बन्ने और वसीम खान, राजा की हत्या करना चाहते थे। निशाना चूकने के कारण गोली अमित को लगी और उसकी मौत हो गई।

आरोपी राजा को क्यों मारना चाहते थे, उनकी उससे किस बात को लेकर दुश्मनी थी, इसकी तहकीकात करने के लिए राजा को पूछताछ के लिए थाने लाया गया था। इधर, वसीम को पुलिस ने मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस राजा

और वसीम को आमने-सामने बैठाकर पूछताछ करने वाली थी। इस पूछताछ से बचने के लिए राजा ने थाने के सामने वाहन से उतरते ही एक कांच के टुकड़े से खुद का गला रेतने की कोशिश की। हालांकि मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने तत्काल ही उसे पकड़ लिया। जिससे उसे गंभीर चोट नहीं आई। डॉक्टर ने उसकी हालत को स्थिर बताया है।

हवाला लूट की रकम को लेकर है पूरा विवाद: पुलिस जांच में सामने आया था कि पिछले दिनों शहर में एकाएक कई हवाला लूटकांड हुए थे। टीटी नगर में हुए हवाला लूट की रकम के बंटवारे को लेकर अमित की हत्या के आरोपी वसीम के भाई और राजा के बीच कहासुनी हुई थी। इसी बात को लेकर आरोपियों और राजा के बीच विवाद था। राजा की हत्या के मकसद से नसीम और वसीम 29 जून को छोला मंदिर थाना क्षेत्र की लीलाधर कॉलोनी पहुंचे थे।

सीपी बोले- हर पहलु की गंभीरता से जांच जारी: पुलिस कमिश्नर हरिनारायणचारी मिश्रा ने बताया कि अमित की हत्या के बाद मामले को गंभीरता से लिया था, केस की जांच एसआईटी कर रही है। अब तक दस आरोपियों की गिरफ्तारी की जा चुकी है। हत्याकांड की हर पहलु पर जांच की जा रही है।

भोपाल में कुख्यात बदमाश सोनू एंजल गिरफ्तार

- पुलिस को देखकर किया हंगामा; पकड़े जाने पर झूमाझटकी भी की

भोपाल (नप्र)। भोपाल में कुख्यात बदमाश सोनू एंजल को कमला नगर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी शाहपुरा इलाके के एक घर में छिपा था। पुलिस की दबिश देखकर उसने भागने का प्रयास किया। पकड़े जाने पर झूमाझटकी की। आरोपी को गुरुवार को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया है। बदमाश लंबे समय से हत्या के प्रयास के मामले में फरार चल रहा था। कमला नगर थाना प्रभारी निरूपा पांडे ने बताया कि करीब पांच महीने पहले कमला नगर इलाके में एक युवक पर दो बदमाशों ने चाकू-छुरी से जानलेवा हमला किया था। पुलिस ने इस मामले में प्रकरण दर्ज किया था। घटना के बाद से बदमाश सोनू एंजल फरार था। मुखबिर से सूचना मिली की वह कोलार इलाके का रहने लगा है, तब पुलिस ने कई बार उसके घर पर दबिश दी लेकिन वह वहां पर नहीं मिला। पुलिस की एक टीम लगातार उसकी गिरफ्तारी के प्रयास कर रही थी। मुखबिर से सूचना मिली कि सोनू एंजेल शाहपुरा इलाके में देखा गया है।

मुखबिर की सूचना के बाद पकड़ा गया आरोपी: सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और मुखबिर द्वारा बताए गए स्थान पर बदमाश की घेराबंदी कर ली। पुलिस को देखते ही बदमाश ने पुलिस टीम पर हमला कर भागने की कोशिश की लेकिन पुलिसकर्मियों ने उसे दबोच लिया। उसे गुरुवार को कोर्ट में पेश किया और जेल भेज दिया है। सोनू एंजल पर भोपाल के अलग-अलग थानों में करीब दो दर्जन आपराधिक मामले दर्ज हैं।

पत्नी से विवाद, पति ने सुसाइड किया

- पत्नी के पड़ोसी के घर जाने से नाराज था पति, फांसी लगाकर दी जान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के एमपी नगर में रहने वाले दंपती के बीच विवाद हो गया। नाराज पत्नी पड़ोसी के घर चली गई। इससे गुस्साए पति ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। घटना बुधवार-गुरुवार की दरमियानी रात की है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक शिवाजी नगर निवासी आशीष त्रिपाठी पुत्र अनिल त्रिपाठी (32) ट्रैवल्स में कार चलाता था। बुधवार की रात उसका अपनी पत्नी से किसी बात को लेकर झगड़ा गया था। इससे गुस्सा होकर पत्नी पड़ोसी के घर चली गई थी, तभी उसने अपने घर में फांसी लगा ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक का शव बरामद कर उसे पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

दिल्ली से भागकर भोपाल पहुंची 3 लड़कियां

मां-पिता की डांट से नाराज होकर ट्रेन में बैठ गई; गौरवी सखी सेंटर भेजा

भोपाल (नप्र)। दिल्ली से भागी 3 लड़कियां ट्रेन में बैठकर भोपाल पहुंच गई। उन्हें भोपाल आरपीएफ की टीम ने रेस्क्यू किया और फिर गौरवी सखी को सौंप दिया। लड़कियों ने बताया कि वे मां-पिता की डांट से नाराज होकर किसी ट्रेन में बैठ गई और भोपाल आ गई। बता दें कि मंडल रेल प्रबंधक देवाशीष त्रिपाठी के मार्गदर्शन में ऑपरेशन नन्हें फरिश्ते चलाया जा रहा है। इसके तहत आरपीएफ ने तीनों का रेस्क्यू किया।

गश्त के दौरान मिली लड़कियां: भोपाल रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-1 पर एएसआई राघवेंद्र सिंह नियमित गश्त के दौरान ड्यूटी पर तैनात थे। इस दौरान उन्होंने तीन नाबालिग लड़कियों को डरी-सहमी अवस्था में बैठे हुए पाया। तत्काल उन्होंने महिला आरक्षक उमा पटेल को बुलाकर लड़कियों को सांत्वना दी और बातचीत का प्रयास किया। स्थानीय यात्रियों से पूछताछ के बावजूद लड़कियों के बारे में कोई स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी। इसके बाद तीनों को आरपीएफ पोस्ट भोपाल लाया गया। पूछताछ में लड़कियों ने बताया कि वे दिल्ली में अपने माता-पिता की डांट से नाराज होकर बिना किसी को बताए किसी अज्ञात ट्रेन में सवार होकर भोपाल आ पहुंची थीं। लड़कियों द्वारा दिए गए मोबाइल नंबर पर उनके परिजनों से संपर्क किया गया और पूरी स्थिति से अवगत कराया। आगे की कार्रवाई के अंतर्गत आरक्षक उमा एवं प्रभारी आरक्षक राकेश कुमार ने तीनों लड़कियों का सामान्य चिकित्सकीय परीक्षण कराकर उन्हें गौरवी सखी सेंटर के सुपुर्द किया। परिजनों के आने के बाद लड़कियों को उन्हें सौंप दिया जाएगा।

13 जुलाई को प्रदर्शन करेंगे बिजलीकर्मी

नियमितीकरण को लेकर सरकार से नाराजगी; प्रदेशभर से भोपाल में जुटेंगे कर्मचारी

भोपाल (नप्र)। संविदा कर्मचारियों को नियमित करने समेत 9 सूत्रीय मांगों को लेकर 13 जुलाई को मध्यप्रदेश के बिजलीकर्मी प्रदर्शन करेंगे। उनका कहना है कि सरकार को 4 जुलाई तक चर्चा करने की बात कही थी। बावजूद चर्चा नहीं हुई। इसके चलते अब आंदोलन का रास्ता अपनाना पड़ेगा। यूनाइटेड फोरम फॉर पावर एम्पलाई इंजीनियर संगठन के बैनर तले यह आंदोलन होगा। प्रवक्ता लोकेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि भोपाल में यह प्रदर्शन नीलम पार्क में होगा। इसमें प्रदेशभर से बिजलीकर्मी जुटेंगे।

5 हजार संविदा कर्मचारी कार्यरत

प्रवक्ता श्रीवास्तव ने बताया कि बिजली विभाग में 5 हजार संविदा कर्मचारी कार्यरत हैं। सभी संविदा कर्मी संपूर्ण चयन प्रक्रिया के तहत लिखित, साक्षात्कार, मेरिट के माध्यम से भर्ती हुए हैं, लेकिन भविष्य सुरक्षित महसूस न कर पाने की वजह से 10-12 साल के अनुभवी संविदा कर्मी अब नौकरी छोड़कर दूसरे विभागों में जा रहे हैं। ट्रांसमिशन एवं डिस्ट्रीब्यूशन विभाग के 100 से अधिक संविदा कर्मी नौकरी छोड़ चुके हैं। उनके आंदोलन पर जाने से बिजली सप्लाई व्यवस्था ठप हो सकती है।

इन मांगों को लेकर आंदोलन

- संविदा कर्मचारियों को सीधे नियमित किया जाए।
- बिजली कंपनियों में गृह जिला ट्रांसफर (कंपनी टू कंपनी) नीति बनाई जाए।
- संविदा नीति 2023 में महंगाई भत्ता डीए, इंक्रीमेंट जोड़ा जाए।
- राजस्व सहायक अधिकारी एवं कार्यालय सहायक उच्च शिक्षा प्राप्त समकक्ष पद पर तकनीकी पद दिया जाए। प्रथम हायर स्केल दिया जाए।
- मध्य क्षेत्र में संविदा परीक्षण सहायक की वेतन विसंगति दूर की जाए।
- संविदा नीति 2023 में पूर्व से निर्धारित भर्ती में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया जाए।
- राष्ट्रीय अवकाश एवं उत्सव अवकाश में संविदाकर्मियों को काम करने पर दोगुना मानदेय दिया जाए।
- नियमित कर्मियों के समान नियम अनुसार 9, 18, 35 वर्ष पूर्ण करने पर उच्च वेतनमान एवं प्रमोशन दिया जाए।
- शासकीय सेवा में संविदा से सीधी भर्ती होने पर 3 वर्ष की परीक्षा अवधि 70, 80 और 90 नियमावली को समाप्त किया जाए।

एक घंटे में 14 किलो ड्राई फ्रूट्स खा गए अफसर

शहडोल में 5 दिन में दूसरा बड़ा घोटाला; 6 लीटर दूध में 5 किलो शक्कर डालकर बनी चाय

शहडोल (नप्र)। भदवाही ग्राम पंचायत में नाले में 25 मई 2025 को जिला स्तरीय बोरी बंधान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कलेक्टर समेत अन्य अधिकारियों ने बोरी में रेत भरकर नाले में पानी को रोकने का काम किया।

मध्यप्रदेश के शहडोल में स्कूल में ऑयल पेंट घोटाले के बाद सरकारी धन के दुरुपयोग करने का दूसरा मामला सामने आया है। जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान के जिला स्तरीय कार्यक्रम में अफसर एक घंटे के दौरान 14 किलो ड्राईफ्रूट खा गए। वहीं 6 लीटर दूध में 5 किलो शक्कर डालकर चाय भी बनाई गई।

कार्यक्रम 25 मई को भदवाही ग्राम पंचायत में हुआ था। इसमें कलेक्टर डॉ. केदार सिंह, जिला पंचायत सीईओ नरेंद्र सिंह, जयसिंह नगर की एसडीएम प्रगति वर्मा और जनपद सीईओ समेत कई अधिकारी शामिल हुए थे। ग्राम पंचायत ने मेजबानी करते हुए अफसरों के लिए टेंट, भोजन और नाश्ते की व्यवस्था की गई थी।

कार्यक्रम में लगाए गए बिल गुरुवार को सोशल मीडिया में वायरल हुए। इसके बाद ये मामला सामने आ सका। जिला पंचायत के प्रभारी सीईओ एमपी सिंह ने कहा कि हम लोग उस आयोजन में गए थे, लेकिन वहां इतना ड्राईफ्रूट नहीं था। बिलों की जांच करवाकर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

डॉ. रिचा पांडे के पति पर चलेगा हत्या का केस

भोपाल कोर्ट में आरोप तय, परिजनों ने जहर देकर मारने के लगाए थे आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल में नवविवाहिता डॉ. रिचा पांडे की संदिग्ध मौत के मामले में पति डॉ. अभिजीत पांडे के खिलाफ आरोप तय कर दिए गए। बुधवार को अपर सत्र न्यायाधीश नीलू संजीव श्रंगीऋषि की कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने अभिजीत पांडे पर पत्नी को आत्महत्या के लिए उकसाने, दहेज हत्या, हत्या, दहेज प्रताड़ना और दहेज प्रतिषेध अधिनियम के तहत आरोप तय किए हैं। बता दें, 21 मार्च 2025 को डॉ. रिचा पांडे की संदिग्ध हालात में मौत हो गई थी। परिजन ने दहेज की मांग को लेकर पति पर जहर देकर हत्या की आशंका जताई थी। शाहपुरा पुलिस को बंसल अस्पताल से डॉ. रिचा पांडे की संदिग्ध मौत की सूचना मिली थी।

पुलिस ने 24 मार्च को रात 10 बजे अभिजीत के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया था।

27 जून को पेश किया चालान

जांच में डॉक्टर रिचा के हाथ में इंजेक्शन लगाने के निशान मिले थे। एनेस्थीसिया का इंजेक्शन देकर हत्या किए जाने के आरोप मृतिका के परिजन ने आरोपी डॉ. अभिजीत पांडे पर लगाए थे।

डॉ. रिचा पांडे

पुलिस ने मामले की जांच के बाद आरोपी डॉ. अभिजीत पांडे के खिलाफ दहेज प्रताड़ना, दहेज हत्या और दहेज प्रतिषेध अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर 27 जून को जिला अदालत में आरोपी के खिलाफ चालान पेश किया था। डॉ. रिचा पांडे मूल रूप से लखनऊ की रहने वाली थी। उनकी शादी दिसंबर 2024 में सतना के रहने वाले डॉ. अभिजीत पांडे से हुई थी।

सुसाइड वाले दिन पति ने कहा- साथ में डिनर किया: रिचा की लाश मिलने के बाद पति अभिजीत पांडे ने कहा था कि बैक पैन की शिकायत के चलते वह 20 मार्च की रात अलग कमरे में सोया था। इससे पहले रिचा के साथ डिनर किया था। 21 मार्च को सुबह जब रिचा के कमरे का गेट नहीं खुला तब मजदूरों को बुलाकर गेट को तुड़वाया। पत्नी बेसुध हालत में बिस्तर पर पड़ी थी। आवाज देने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। तत्काल उसे बंसल हॉस्पिटल पहुंचाया गया।

संपादकीय

विकास का पुल ध्वस्त!

देश में पुलों के गिरने और नवनिर्मित सड़कों के पहली ही बारिश में उखड़ने की घटनाएं कम होने की जगह बढ़ती ही जा रही हैं। मध्यप्रदेश में जिस गैरपेशवराना स्टाइल में ओवर ब्रिज बन रहे हैं, उससे तो ये लगने लगा है कि हमारे सिविल इंजीनियरों को कुछ आता भी है या नहीं या फिर सिर्फ पैसा खाने और बड़ा हिस्सा 'ऊपर' तक पहुंचाने के लिए ही उन्हे नौकरी पर रखा जा रहा है। पुलों के गिरने की श्रृंखला में ताजा कड़ी और गुजरात है, जहां महीसागर नदी पर बने गंभीरा पुल का एक हिस्सा सुबह 7.30 बजे अचानक ढह गया। निर्माणाधीन अथवा नवनिर्मित पुलों के गिरने का रिकॉर्ड तो बिहार में बना है, लेकिन गुजरात का यह हादसा उससे भी ज्यादा भयानक और चिंतित करने वाला हैं, क्योंकि जब पुल का हिस्सा गिरा, जिस वक्त गिरा, उस वक्त पुल पर से वाहन गुजर रहे थे। पुल की एक स्लैब गिरते ही उस पर गुजर रहे वाहन और उनमें बैठे यात्री सीधे 110 फीट नीचे जा गिरे, जिसमें 11 लोगों की मौत हो गई। कुछ लोगों को बचा लिया गया। वडोदरा कलेक्टर अनिल धामेलिया ने बताया कि हादसे में 11 लोगों की जान गई है और छह घायलों का अस्पताल में इलाज जारी है। बताया जाता है कि यह पुल 1985 में बना था। हादसे के कारणों की जांच के आदेश दिए गए हैं। स्थानीय लोगों ने इस हादसे के लिए यहां के प्रशासनिक अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया है। उनके मुताबिक इस जर्जर पुल की कई बार शिकायत की गई थी। लेकिन किसी से ध्यान नहीं दिया। बिना किसी पूर्व चेतावनी के हुए इस हादसे में दो ट्रक, एक पिकअप वैन और एक अन्य वाहन नदी में गिर गए। ज्यादा समय नहीं बीता है जब मोरबी में ऐसा ही हादसा हुआ था, जिसमें 135 लोग मारे गए थे। गंभीरा ब्रिज, जो माहीसागर नदी पर स्थित है और मध्य गुजरात को सौराष्ट्र से जोड़ता है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने भी घटनास्थल पर विशेषज्ञों की एक टीम भेजकर जांच के आदेश दिए हैं। इस हादसे ने वडोदरा, आनंद, भरूच और अंकलेश्वर को सौराष्ट्र से जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी को तोड़ दिया है, जिससे क्षेत्रीय परिवहन और व्यापार प्रभावित हुआ है। कांग्रेस पार्टी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक वीडियो साझा करते हुए इस हादसे को 'गुजरात मॉडल' के नाम पर भ्रष्टाचार का परिणाम बताया और प्रभावित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की।

उसमे भी हादसे में गुजरात सरकार की प्रशासनिक लापरवाही स्पष्ट रूप से सामने आई थी। विशेष जांच दल (एसआईटी) की अंतिम रिपोर्ट के अनुसार, मोरबी नगर पालिका ने बिना किसी निविदा प्रक्रिया के ओरेवा ग्रुप, एक घड़ी निर्माण कंपनी, को पुल के रखरखाव और संचालन का ठेका दे दिया, जो तकनीकी रूप से इस कार्य के लिए अक्षम थी। इसके अलावा, मरम्मत के बाद पुल को फिर से खोलने से पहले स्थानीय नगर पालिका से फिटनेस प्रमाणपत्र प्राप्त नहीं किया गया था। जांच में यह भी पाया गया कि केवल 2 करोड़ रुपये के ठेके में से मात्र 12 लाख रुपये ही मरम्मत पर खर्च किए गए, जो सरकारी भ्रष्टाचार और निगरानी की कमी को दर्शाता है। सरकार ने हादसे के बाद नगर पालिका को निलंबित कर दिया, लेकिन यह कदम देर से उठाया गया, जिससे प्रशासनिक जवाबदेही पर सवाल उठे। इस हादसे ने गुजरात के तथाकथित 'विकास मॉडल' पर सवाल उठा दिए हैं, क्योंकि बार-बार होने वाली ऐसी घटनाएं सरकारी प्रणालियों में जवाबदेही और पारदर्शिता की कमी को उजागर करती हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पुल ढहने की घटना पर दुख जताया है। सवाल यह है कि पुल निर्माण में जो भारी भ्रष्टाचार और लापरवाही हो रही है, वह रूकेगी?

अनुसूचित जातियों की उम्मीद मानवाधिकार आयोग

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। आप केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने इक्वैलिटी के लिए भारत में अनेक प्रयास किया था। उन्होंने यह सोचा था कि आज़ादी के बाद हमारे देश की जनता बराबरी के साथ रहना सीख लेगी। अनुसूचित जाति के लोग भी एक समय के बाद अपनी गरिमा के साथ जी सकेंगे। लेकिन अभी तक भारत में अनुसूचित जाति का समाज यातना सहने को मजबूर है। उसके ऊपर तस्करी का आरोप लगाया जा सकता है। उसके सर के बाल मुड़वाए जा सकते हैं। उसे घास खिलाई जा सकती है। उसे मार खानी पद सकती है। उसे जलील होना पड़ सकता है। उसे अपने ही भूभाग पर लज्जित जीवन जीने पड़ सकते हैं।

अनुसूचित जाति का समाज आज़ादी के 75 वर्ष बाद आज़ाद भारत में जानवरों जैसे घास खाने के लिए विवश किया गया है। यह मामला है उड़ीसा का, जहाँ अनुसूचित जाति के लोग सुरक्षित नहीं हैं। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग (एनएचआरसी) को 'द न्यू इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित एक समाचार रिपोर्ट मिली। जिसमें इस बात का खुलासा किया गया था कि 22 जून 2025 को उड़ीसा के गंजम जिले में दूसरे समुदाय के लोगों द्वारा अनुसूचित जाति से संबंधित 52 वर्षीय बुलू नायक और 43 वर्षीय बाबुल नायक नामक दो व्यक्तियों की पिटाई की गई। उन्हें घास खाने और नाली का पानी पीने के लिए मजबूर किया गया। आरोप है कि उन पर मवेशियों की अवैध तस्करी ये लोग कर रहे थे। इस बात को लेकर उन्हें शारीरिक रूप से पीटा गया। उनके मोबाइल फोन छीन लिए गए। उन्हें एक स्थानीय सैलून में ले जाया गया। उनके सिर भी जबरदस्ती मुंडवा दिए गए।

उड़ीसा के सैकड़ों इलाके ऐसे हैं जहाँ अनुसूचित जाति के लोग रहते हैं। आंकड़े बताते हैं की देश की कुल अनुसूचित जाति की आबादी की साढ़े तीन से चार प्रतिशत की आबादी उड़ीसा में रहती है। ओडिशा में अनुसूचित जातियों यानि एससी समाज के साथ भेदभाव एक गंभीर समस्या है। सामाजिक बहिष्कार, भेदभाव, और हिंसा के मामले अभी भी सामने आते हैं, जिससे उनके जीवन के कई पहलुओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भेदभाव के कारण, अनुसूचित जातियों को गरीबी और आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। एक तो शिक्षा की कमी, दूसरे भेदभाव की स्थितियां उड़ीसा के अनुसूचित जातियों को उबरने नहीं दे रही हैं। बहिष्कार, भेदभाव व हिंसा यह जिन समाज द्वारा अनुसूचित जातियों पर किया जाता है, वे अपने बर्चस्व को बनाए रखने के लिए ऐसा करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि उनका यह बर्ताव मनुष्य के गरिमा के खिलाफ है और हिंसा से अनुसूचित जातियों के मानवाधिकार अतिक्रमित होते हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प 2106 जो कि 21 दिसंबर 1965 को हुआ था, उसका स्मरण आता है। इस संकल्प पत्र में दो महत्वपूर्ण बात कही गयी थी। पहला, सभी प्रकार के नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा यह घोषणा करती है कि सभी मनुष्य गरिमा और अधिकारों में स्वतंत्र और समान पैदा होते हैं। सभी को बिना किसी भेदभाव के, विशेष रूप से जाति, रंग या राष्ट्रीय मूल के आधार पर, इसमें निर्धारित सभी अधिकारों और स्वतंत्रताओं का अधिकार है। दूसरा, सभी मनुष्य कानून के समक्ष समान हैं और किसी भी भेदभाव और भेदभाव के लिए किसी भी उकसावे के खिलाफ कानून के समान संरक्षण के हकदार हैं। यह दोनों बातें बर्चस्व बनाए रखने वाला समाज सदैव अनदेखा कर देता है। समृद्धशाली भारतीय जातियां मनुष्य की गरिमा का ख्याल नहीं करते और उनके ऊपर अत्याचार करते हैं। उड़ीसा की घटना इसका साक्षात् प्रमाण है। यह घटना उड़ीसा में अनुसूचित जाति के लोगों की सुरक्षा और सम्मान पर गंभीर चिंताएं पैदा करती है। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने स्वतः संज्ञान लिया है। यह आयोग का बहुत ही महत्वपूर्ण फैसला है। वास्तव में, अब भी ऐसी घटनाएँ कई बार सोचने को बाध्य करती हैं कि हमारा समाज आज भी किस दशा में जी रहा है। हमारे भारतीय जनमानस में अनुसूउचित जातियों पर अतिक्रमण की बुरी प्रथा का तक रहेगी? आयोग ने जिस तत्परता से अनुसूचित जातियों के साथ हुए घृणित बर्ताव को संज्ञान में लिया, वह निश्चय ही इस बात का प्रमाण है कि न्याय की उम्मीद अनुसूचित जाति को कभी छोड़ने की ज़रूरत नहीं है।

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने इक्वैलिटी के लिए भारत में अनेक प्रयास किया था। उन्होंने यह सोचा था कि आज़ादी के बाद हमारे देश की जनता बराबरी के साथ रहना सीख लेगी। अनुसूचित जाति के लोग भी एक समय के बाद अपनी गरिमा के साथ जी सकेंगे। लेकिन अभी तक भारत में अनुसूचित जाति का समाज यातना सहने को मजबूर है। उसके ऊपर तस्करी का आरोप लगाया जा सकता है। उसके सर के बाल मुड़वाए जा सकते हैं। उसे घास खिलाई जा सकती है। उसे मार खानी पद सकती है। उसे जलील होना पड़ सकता है। उसे अपने ही भूभाग पर लज्जित जीवन जीने पड़ सकते हैं। वह अत्याचार को सहन करने के लिए बाध्य हो सकता है। दूसरे बर्चस्वशाली समाज के लोग अनुसूचित जातियों के जीवन के साथ खेल सकते हैं। उनके संचार के माध्यम छीने जा सकते हैं। उन्हें भयभीत किया जा सकता है। यह देश बहुत महान होने का भले दंभ भर ले, लेकिन यह कृत्य भारत की छवि के लिए हानिकारक हैं।

एनएचआरसी, भारत ने ओडिशा के गंजम जिले में अवैध रूप से मवेशियों की तस्करी के संदेह में अनुसूचित जाति के जिन दो व्यक्तियों पर दूसरे समुदाय के कुछ लोगों द्वारा कथित अत्याचार किया है उसका स्वतः संज्ञान लिया गया है। आयोग ने ओडिशा के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक, को नोटिस जारी करके दो सप्ताह के भीतर मामले पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। आयोग का मानना है कि यदि समाचार रिपोर्ट की सामग्री सत्य है, तो यह मानव अधिकारों के उल्लंघन का यह गंभीर मुद्दा है। किसी को भी किसी की गरिमा के साथ खेलने का कोई हक नहीं है। अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित होनी चाहिए। पीड़ितों को उनकी गरिमा की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त करना चाहिए। आयोग की यह कोशिश निश्चय ही उसके गंभीरता को प्रकट करती है। उड़ीसा के गरीब, दलित, दमित समाज को जीने की उम्मीद देती है। उड़ीसा के अनुसूचित जातियों कड्ढी गरिमा का यह आश्वासन डॉ. आंबेडकर की चिंताओं का निराकरण है। डॉ. आंबेडकर के भारत को गरिमा के साथ स्थापित करने की यह कोशिश है। एनएचआरसी, भारत और इसके अध्यक्ष, माननीय सदस्य व महासचिव ऐसी कोशिशों से निश्चित रूप से जो प्रयास कर रहे हैं, उसकी तारीफ की जानी चाहिए।

सामाजिक अशांति फैलाने वाले तत्वों की पहचान भी होना ज़रूरी है। हमारे समाज में अराजकतावादी जो कि गरीब व दमित समाज के साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं, उन्हें ख़त्म करना भी ज़रूरी है। जो अनुसूचित जाति के लोगों के साथ संदेह में घटनाएं हुईं, वह बताती हैं कि संदेह में कोई अप्रिय व बड़ी घटनाएँ भी ऐसी स्थिति में हो सकती हैं। इसलिए स्थानीय स्तर पर जो ऐसे कृत्य कर रहे हैं, उनमें व्यवहारिक परिवर्तन की भी कोशिश होनी चाहिए जिससे कोई अप्रिय घटना न घटे। एनएचआरसी, भारत तो स्वतः संज्ञान लेकर सुरक्षा व गरिमा की गारंटी दे सकता है। स्थानीय स्तर पर इसके लिए समाज के अभिजात्य वर्ग के लोगों व सेवाभावियों का दायित्व है कि वे गरीबी से जूझ रहे समाज के हित में कार्य करें। उन लोगों को समझाएं जो किसी जाति, वर्ग व समूह के साथ हिंसक हो जाते हैं और उनकी गरिमा के साथ खेलने लगते हैं। भारत के इस महत्वपूर्ण समय को यदि सभी के साथ सहिष्णु होकर हम आगे बढ़ेंगे तो भारत की जितनी भी विसंगतियां हैं, वे अपने आप मिट जाएँगी। यदि संदेह के साथ हिंसा व असहिष्णु व्यवहार होते रहे तो श्रेष्ठ भारत का हम निर्माण कभी नहीं कर सकेंगे।

सामूहिक जिम्मेदारी का भाव जगाता अभियान

जल गंगा संवर्धन अभियान

लोकेन्द्र सिंह

लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अपने अभिनव प्रयोगों से अपनी विशेष पहचान बना रहे हैं। मध्यप्रदेश में जल संरक्षण के लिए प्रारंभ हुआ 'जल गंगा संवर्धन अभियान' मुख्यमंत्री डॉ. यादव की दूरदर्शी पहल है। निकट भविष्य में हमें इसके सुखद परिणाम दिखायी देंगे। शुभ प्रसंग पर शुभ संकल्प के साथ जब कोई कार्य प्रारंभ किया जाता है, तब उसकी सफलता के लिए प्रकृति एवं ईश्वर भी सहयोग करते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर मध्यप्रदेश सरकार ने गुड़ी पड़वा (30 मार्च) से 30 जून तक प्रदेश स्तरीय 'जल गंगा संवर्धन अभियान' चलाकर जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया, जो जनांदोलन में परिवर्तित हो गया। सरकार को भी विश्वास नहीं रहा होगा कि जल संरक्षण जैसे मुद्दे को जनता का इतना अधिक समर्थन मिलेगा कि सरकारी अभियान असरकारी बन जाएगा और समाज इस अभियान को अपनी जिम्मेदारी के तौर पर स्वीकार कर लेगा। 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के अंतर्गत और इससे प्रेरित होकर प्रदेश में अनेक स्थानों पर जल स्रोतों को पुनर्जीवित किया गया, उनको व्यवस्थित किया गया और वर्षा जल को एकत्र करने की रचनाएं बनायी गईं। कहना होगा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल और प्रतिबद्धता ने जल संरक्षण के इस अभियान को एक जनांदोलन का रूप दे दिया है, जिससे जल संरक्षण में अभूतपूर्व प्रगति हुई है।

जल गंगा संवर्धन अभियान को गति देने के लिए मनरेगा योजना के अंतर्गत खेत तालाबों, अमृत सरोवरों और कूप रिचार्ज पिट का निर्माण किया गया है। साथ ही पुरानी जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार भी किया गया है। इस अभियान में 2 लाख 39 हजार जलदूतों का सक्रिय सहयोग मिला, जिन्होंने जल संवर्धन के संदेश को घर-घर तक पहुँचाया। ये जलदूत जब गाँव-गाँव, नगर-नगर और घर-घर जल संरक्षण का संदेश लेकर पहुँचे तो एक सकारात्मक वातावरण भी बना और जल संरक्षण को लेकर समाज के भीतर एक जागरूकता भी आई। निःसंदेह, यदि यह जनजागरूकता स्थायी हो जाए तो जल गंगा संवर्धन अभियान की सबसे बड़ी सफलता होगी। अभियान को शुरू करते समय सरकार ने जो लक्ष्य तय किया था, उससे कहीं अधिक परिणाम धरातल पर प्राप्त हुआ है। जल संरक्षण के लिए 38 हजार नए खेत तालाबों का निर्माण किया गया है। खंडवा जिले में 254 करोड़ रुपये की लागत से 1 लाख से अधिक कुओं को रिचार्ज किया गया, जिसके लिए खंडवा को देश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। इंदौर संभाग ने स्वच्छता और जल संरक्षण में नंबर-एक का स्थान

हासिल किया है। ये दो प्रमुख उदाहरण हैं। प्रदेश के अन्य जिलों में भी उल्लेखनीय कार्य हुआ है। समूचे मध्यप्रदेश में 70 हजार कुओं, बावड़ियों, नदियों और तालाबों का संरक्षण किया गया, जो जल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करनेवाले हैं।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से प्रेरित हैं। याद हो कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जल संरक्षण के लिए जनांदोलन चलाने का आह्वान किया था। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति से आग्रह किया कि वह अपने स्तर पर वर्षा जल के संरक्षण के लिए प्रयास करे। प्रधानमंत्री मोदी की पहलकदमी पर भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय ने राष्ट्रीय जल मिशन के अंतर्गत 'कैच द रेन' अभियान को शुरू किया है। इस अभियान का मुख्य लक्ष्य वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण को बढ़ावा देना है। यह अभियान व्यक्तियों, समुदायों और सभी हितधारकों को वर्षा जल संचयन संरचनाएं बनाने तथा जल संरक्षण की पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी इसी तर्ज पर 'जल गंगा संवर्धन अभियान' को जनता के बीच ले जाने का अनुकरणीय कार्य किया है। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. यादव, दोनों ही प्रकृति, पर्यावरण एवं समाज के प्रति गहरी संवेदनाएं रखते हैं। राजनीति से इतर वे इन सब विषयों पर बात रखते हैं और लोगों को इस दिशा में प्रेरित भी करते हैं। उल्लेखनीय है कि अपने लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 120वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने जल संरक्षण को देश के लिए अत्यंत आवश्यक बताया था। उन्होंने जल संचय जन-भागीदारी अभियान के महत्व पर भी जोर दिया और कहा कि यह हमारी जिम्मेदारी है कि 'जो प्राकृतिक संसाधन हमें मिले हैं, उसे हमें अगली पीढ़ी तक सही सलामत पहुँचाना है'। कहना होगा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में चलाए गए जल गंगा संवर्धन अभियान ने प्रधानमंत्री के इस दृष्टिकोण को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अकसर सरकारी अभियान विज्ञापनों एवं कागजों में दम तोड़ देते हैं या फिर उनकी सफलता सोशल मीडिया तक सीमित रह जाती है। यह आंदोलन अपने वांछित लक्ष्य से आगे निकल रहा है क्योंकि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस अभियान को जन आंदोलन बनाने का आह्वान किया है। उनका मानना है कि जल ही हमारे जीवन के अस्तित्व का आधार है, इसलिए इसकी एक-एक बूंद बचाना अनिवार्य है। उनकी गहरी प्रतिबद्धता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने इस अभियान की देखरेख की जिम्मेदारी सभी जिलों के प्रभारी मंत्रियों और जनप्रतिनिधियों को सौंपी है। लोग बड़ी संख्या में श्रमदान कर पानी को बचाने की कोशिश में जुटे हुए हैं। जिला प्रशासन विशेष रूप से नदियों के किनारे देशी प्रजातियों के पौधे रोप रहा है। इससे जमीन के नीचे जल-स्तर बढ़ रहा है और मिट्टी को नुकसान से बचाया जा रहा है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रूफ वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को अनिवार्य कर दिया गया है। स्कूल और कॉलेजों में जल-संरक्षण पर जन-जागरण अभियान, रैलियां, निबंध प्रतियोगिताएं, जल संवाद और 'जल प्रहरी' जैसी गतिविधियों को संचालित किया जा रहा है। अभियान की सफलता सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल मॉनिटरिंग और मूल्यांकन प्रणाली की व्यवस्था की गई है, जिसमें सभी गतिविधियों की जीआईएस ट्रैकिंग और इंपैक्ट वैल्यूएशन किया जा रहा है। सरकार ड्रोन से सर्वेक्षण, वैज्ञानिक तरीके से जलग्रहण क्षेत्र की मैपिंग और भू-जल पुनर्भरण तकनीकों का उपयोग कर रही है। इन सब प्रबंधों से स्पष्ट तौर पर प्रतीत होता है कि प्रदेश सरकार का यह अभियान मुख्यमंत्री के सर्वोच्च प्राथमिकता वाले कार्यों में से एक है। इस अभियान का उद्देश्य केवल जल स्रोतों को पुनर्जीवित करना ही नहीं, बल्कि उनकी निरंतर देखरेख और संरक्षण सुनिश्चित करना भी है। सरकार ने इन स्रोतों की सफाई, सीमांकन और पुनर्जीवन के लिए जनभागीदारी को प्रोत्साहित किया है। लोग बड़ी संख्या में श्रमदान कर जल संरक्षण में सहयोग कर रहे हैं। इस अभियान के दूरगामी परिणाम अपेक्षित हैं। बारिश के मौसम में इसके और अधिक प्रभावी परिणाम दिखेंगे, जिससे भूजल स्तर में सुधार होगा, हरियाली बढ़ेगी और मिट्टी में नमी आएगी। इससे पूरे प्रदेश में जल संकट को दूर करने में सहायता मिलेगी। इसके अलावा, इस अभियान ने समाज की मनोवृत्ति पर भी सकारात्मक प्रभाव डाला है, जिससे जल संरक्षण एक सामूहिक जिम्मेदारी के रूप में उभरा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में यह अभियान निश्चित रूप से मध्यप्रदेश को जल-समृद्ध राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मुफ़्त की शुभकामनाओं से क्या हासिल?

कटाक्ष

मुकेश नेमा

लेखक मप्र के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

यह तय है कि आप कभी न कभी ,किसी न किसी तरीक़े से पैदा हुए थे।माँ बाप की मर्ज़ी से हुए हो या उनकी मर्ज़ी के बग़ैर।पर यदि आप इस नश्वर दुनिया में सशरीर, बिना भूत बने मौजूद हैं, तो इसका सीधा मतलब यह है कि आप कभी न कभी पैदा हुए थे और जो पैदा होता है उसे ज़िंदा रहने तक ,औक़ात अनुसार थोड़ी बहुत शुभकामनाएँ मिलती ही मिलती है। शुभकामनाएँ, पैदा होने वाले से आपके संबंधों पर निर्भर। भाँति भाँति की। दिल से निकली। झूठी, सच्ची, औपचारिकता जैसी। ज़बरदस्ती जैसी ज़रूरी वाली ,महँगी ,सस्ती ,हवा हवाई टाईप, फोकट की। कभी पैदा हो चुका बंदा प्रेमी ,दोस्त ,बाप , बाप जैसा भाई ,दूर पास का रिश्तेदार ,पड़ौसी हो सकता है आपका ,या बॉस भी जिसे बधाई दिए बिना आपका मरण भी मुमकिन है।

अब पैदा होने वाला यदि बॉस है आपका ,तब तो आपकी मजबूरी है यह कि आप उसे ,उसके नहा धोकर ,फ़ारिग होने और नाश्ता कर लेने के फ़ौरन बाद शुभकामनाएँ दे ही दें पैदा होने की। उसे यह बताना फर्ज बनता है आपका कि आपने पैदा होकर तमाम दुनिया पर ख़ासकर मुझ पर बहुत बड़ा अहसान किया है। पर यदि वो दुनिया जहान से निराश,थका हारा, चिड़चिड़ा,बंदा हो तो? तब ये निरापद,सामान्य सा, औपचारिक काम भी आपकी धज्जियाँ उड़ा सकता है। क्या घट सकता है आपके साथ ? आईए इसकी एक बानगी देखें।

सर। नमस्कार सर।शर्मा निवेदन कर रहा हूँ।

हूँ। बोलिए।

सर। आपका जन्मदिन है आज। हार्दिक मंगलकामनाएँ। बधाई स्वीकार कीजिए मेरी।

अब शर्मा, इसमें शुभकामनाएँ बधाई देने जैसा क्या है ?

सर !सर !समझा नहीं मैं !

आपका न समझना ही तो दिक्क़त है शर्माजी।

माफ़ कीजिए सर। कुछ ग़लत कह दिया मैंने ?

सही क्या है इसमें शर्माजी ? गिनती की साँसें ,नपा तुला वक्त मिला है हम सभी को। उसमें से भी एक साल और बीत गया।

सर!

बीता क्या बर्बाद ही हो गया यह साल। लूप लाईन में पड़े हैं। रोज़ रोज़ वही बेवक़ूफ़ी। ऑफिस जाओ। सन्नाटे में सूखी फ़ाईलों से जूझो और शाम को थके हारे लौट आओ।

सर ठीक हो जायेगा ये सब।

ख़ाक ठीक होगा। दो साल कोरोना की वजह से बर्बाद हो गए। चार साल से यहां सड़ रहे हैं। सारे बकवास काम मेरे माथे। साल के तीन सौ पैंसठ दिन और बचे हैं नौकरी के। निकलने की सूरत दिखती नही। कहीं कोई सुनवाई है नही। ऑफिस की लिफ़्ट ख़राब है। घुटनों में दर्द रहता है। चपरासी बाबू कान नहीं देते घंटी पर। न औलाद काबू मे ना बीपी शुगर। ऐसे में साला काहे का जन्मदिन और काहे की शुभकामनाएँ।

पर सर। अब रिवाज है ,शुभकामनाएँ देने का।

बकवास है सब। मुँह उठाए चलें आते हैं लोग। ख़ाली हाथ हिलाते। अब तो उतने भी नहीं आते जितने पहले आते थे। और हासिल क्या होता है ऐसी मुफ़्त की शुभकामनाओं से ? इकसठ सालों में मेरा क्या बन गया इनकी वजह से ? कुछ नही। मर जायेगे दस पन्द्रह साल में। हो सकता है शुगर और ब्लड प्रेशर और पहले मार डाले। बताओ तब क्या कर लेगी ये शुभकामनाएँ ? क्या होगा उनसे ? ज़िंदा हो जाऊँगा ऐसी फ़िज़ूल बातों से ,लॉटरी खुल जायेगी मेरी ? बातों का जमा खर्च भर होती है शुभकामनाएँ। वक्त की बर्बादी बस।

अब तक छक्के छूट चुके होते हैं आपके।

घिघियाते हैं अब आप। माफ़ कीजिए सर। वाक़ई गलती हो गई मुझसे। इस तरह से कभी सोचा नहीं था मैंने।

शर्माजी। यही तो कहता हूँ मैं। सोचते ही तो नहीं हो।

आप पर पहाड़ टूटता है अब। फौरन छत से कूद जाने या बॉस को गला घोंट कर मार देने की इच्छा होने लगती है ज़ोर से। पर ऐसा नहीं करते आप। आप एक बार और माफ़ी माँगते हैं अपने बॉस से ,और तब तक माँगते रहते हैं जब तक वो फ़ोन डिस्कनेक्ट नहीं कर देता।

ख़तरनाक है शुभकामनाएँ देना भी। इनके आदान प्रदान करने के पहले बहुत सोच विचारने की ज़रूरत होती है। ख़ासकर तब ,जब पैदा होने वाला बंदा आपका बॉस हो।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बनाने और तोड़ने में ही समझदारी है

व्यंग्य

ब्रजेश कानूनगो

अभी मैंने अखबार खोला ही था कि पड़ोसी मित्र साधुरामजी उसी अखबार का पन्ना लहराते हुए चले आए। जरूर कोई ऐसी खबर उन्होंने पढ़ ली थी जिसने उन्हें आक्रोशित कर दिया होगा। अपने भीतर उठते वैचारिक तूफान को शांत करने के लिए वे अक्सर इसी तरह मेरे पास दौड़े चले आते हैं। 'अब देखिए इनकी मूर्खताएं! पहले बनाया और अब दस साल बाद तोड़ रहे हैं, हमारे टैक्स के पैसों की ऐसी बर्बादी। जब बीआरटीएस व्यवस्था के निर्माण को तोड़ना ही था तो इसे बनाया ही क्यों? यह कैसी समझदारी है?' साधुरामजी सोफे में धंसते झल्लाते हुए बोले।

'बंधु! नागरिकों की सुविधा का ध्यान रखकर ही इसे तोड़ रहे हैं, यातायात की सुगमता में यह बाधक बन रहा है। हटाने में ही समझदारी है।' मैंने समझाने का प्रयास किया तो वे और अधिक खिन्न होकर बोले, 'भाई साहब तब भी तो नागरिकों की सुविधा का ध्यान रखकर ही बनाया था कि इससे लोक परिवहन को बल मिलेगा। और अब जब हटा रहे हैं तब क्यों मूर्खता का ताज धारण कर रहे हैं?, अब क्या समझदारी तेल लेने गई है?' साधुरामजी का क्रोध बढ़ता ही जा रहाथा। बंधु, जो तुम्हे मूर्खता लग रही है शायद उसी में कोई समझदारी छुपी हुई हो। मूर्खता की म्यान में ही समझदारी की तलवार रखी होती है, शासन, प्रशासन उसी से जनता के कष्टों की खरपतवार का सफाया करते रहते हैं। 'मैंने उनके गुस्से की रेलगाड़ी को दूसरी पटरी पर डालने की कोशिश की।

'भैया, बात को घुमाओ मत, यह जमाना ही मूर्खताओं के जंगली जहरीले फूलों सेलहलहा रहा है, कितना सफाया करोगे आप, कुछ को हटाओ तो हजार नई मूर्खताएंखिल उठती हैं।' साधुरामजी कहां रुकने वाले थे, शायद बहुत समय से उनके भीतर का जमा लावा बाहर निकलने को बेचैन था। मेरा भी कुछ मूड अब बनने लगा था। मुद्दा महत्वपूर्ण था, विमर्श जरूरी था।

मैने उनकी ही पटरी पर आते हुए बात को आगे बढ़ाया, 'साधुरामजी यह सच है कि तोड़ फोड़ हो रही है लेकिन कैसे कह सकते हैं कि यह सब मूर्खताओं की श्रेणी में आएगा। बनाने में भी रोजगार की गुंजाइश थी और अब निर्माण को हटाने में भी बहुतों को रोजगार मिलेगा। पूंजी का आवागमन होगा। माल बनाने के मौके मिलेंगे। भ्रष्टाचार की गुंजाइश पैदा होगी। सब जानते हैं तंत्र की मशीनों में बिना भ्रष्टाचार की चिकनाई डाले कोई गति पैदा नहीं की जा सकती। जमाना कोई भी रहा हो। बनाने, तोड़ते रहने में ही सबका हित है, समझदारी है। मैं अब भी मानता हूं कि मूर्खता की म्यान में ही समझदारी की तलवार रखी होती है।'

'तुम जो भी कहो बंधु, मगर इसमें कोई शक नहीं कि यह मूर्खताओं का ही जमाना है। आज जब दो तरफ से बन रहा ओवर ब्रिज बीच तक आकर दो फिट ऊपर नीचे हो जाता है तो बताइए इसमें इंजीनियर को मूर्ख ठहराएंगे या शिक्षा व्यवस्था को? जब ताजा बने पुल बड़ी संख्या में नदियों में समा जाते हैं तो मूर्ख कौन रहा होगा? ठेकेदार, सरकार, प्रकृति या अपने आंख, कान, मुंह बंद किए बापू के हम बंदर? चहुं ओर मूर्खताओं के इंद्रधनुष खिले दिखाई देते हैं।' साधुरामजी बोले।

मैने भी अब रफ्तार पकड़ ली थी। 'आप ठीक ही कह रहे मित्र, सरकार समझदारी दिखाते हुए नए नए कॉलेज और विश्वविद्यालय खड़े तो करती है लेकिन शिक्षको की भरती करना भूल जाती है। कुछ छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते रह जाते हैं और कुछ पेपर लीक करवाकर लोक कल्याण का काम कर देते हैं। गरीबी,ईमानदारी का होना मूर्खता हो जाती है और पैसा समझदारी की पहचान। ऐसे में सफल प्रतिभाएं देश से पलायन करती हैं तो असफल लोग डंकी मार्ग से पलायन के लिए बाप दादा के खेत, जमीन ,घरों को गिरवी रखने को मजबूर हो जाते हैं। बताइए इसमें किसे मूर्खता कहेंगे और किसे समझदारी। इस तरह भी तो लोग मूर्खता करते हुए अपने सुख के रास्ते तलाश लेते हैं।'

'परन्तु इधर आजादी के अमृतकाल में जीडीपी से ज्यादा तो मूर्खता की दर ज्यादा तेजी से बढ़ती जा रही है मित्र, जैसे मूर्खता न हुई महंगाई मौसी हो गई हो!' साधुरामजी ने विचारों की राजनीतिक पटरी पर अपनी गाड़ी डायवर्ट करते हुए कहा।

मैंने समर्थन करते हुए उनकी गाड़ी को थोड़ा और एक्सलरेट किया, 'हां साधुरामजी! बड़े संघर्षों से हमने आजादी पाई है,अपना संविधान बनाया है और यह लोकतांत्रिक जमाना आया है। इस जमाने में मतदान का बड़ा महत्व है। नागरिक अपने वोट से अपनी सरकार चुनते हैं। हम भी चुनते रहे। आरोप लगाते रहे कि पिछली सरकारों ने कुछ नहीं किया, वे सिर्फ मूर्खताएं करती रहीं। बापू ने यह गलती की, नेहरू ने वह गुनाह किया। कितना आश्चर्यजनक है कि लगातार मूर्खताओं के बावजूद आज हम विश्व की सबसे बड़ी पांचवीं अर्थव्यवस्था हैं। यह बहुत विचारणीय प्रश्न है भाई साहब।'

मैं अपनी धुन में लगातार बोले ही जा रहा था। 'निर्दोष चुनावों के लिए बैलेट से चुनाव में बूथ कैप्चरिंग के खतरों से बचने हेतु हमने मशीनों से मतदान की प्रक्रिया को अपनाने की जोखिम उठाई। अब ईवीएम पर संदेह है। किस पहल को मूर्खता कहें और किस को समझदारी। न्याय प्रणाली के निर्णय को संसद के अध्यादेश से पलट दिया जाए तो बताइए किसने मूर्खता की होगी? हमारी चुनी सरकार ने मूर्खता की या संविधान की व्याख्या करने वालों ने। या संविधान निर्माताओं का इसमें कोई दोष है या हम मतदाताओं का?'

साधुरामजी ने मेरी बात को और सहारा दिया, 'एक जमाने में किसी खास विचारधारा से जुड़कर राजनीतिक दल में प्रवेश करना मूर्खता थी या अपनी विचारधारा छोड़ देश सेवा के लिए किसी दलदल में कूद जाना मूर्खता है?'

अब वे फिर बेबाक हो गए थे, किसी राजनीतिक विश्लेषक की तरह कहने लगे,'निरपराध व्यक्ति को बिना सुनवाई बरसों जेल में बंद रखने को मूर्खता कहा जाए या भ्रष्टाचार के आरोप से घिरे व्यक्ति को मंत्री पद से नवाजना समझदारी की मिसाल कहा जाएगा? जो बातें हमें मूर्खताओं के रूप में नजर आती हैं वे क्या वक्त की मांग होती हैं? क्या वे सब सत्ता की कोई समझदारीहै या नागरिकों की चुप्पी किसी बड़ी मूर्खता का संकेत?'

इस पर मैं क्या कहता! निरुत्तर था। बस अपनी मान्यता पर इलेक्ट्रोरल बॉन्ड की तरह अवैध रूप से अड़ा रहा, मेरा अब भी विश्वास था कि हर जमाना मूर्खताओं से भरा होता है। मूर्खता की म्यान में समझदारी की तलवार रखी जाती रही है और हर जमाने में यह होता रहा है।

बीमार तंत्र

प्रद्युम्न राकेश चौरे

कैंसर की लड़ाई से ज्यादा बड़ी है इलाज पाने की लड़ाई

महान गजलकार दुष्यंत कुमार की एक मशहूर ग़ज़ल का शेर है - गिड़गिड़ाने का यहाँ कोई असर होता नहीं/ पेट भरकर गलियां दो आह भरकर बद-दुआ। पिछले पंद्रह महीनों से लगातार मध्यप्रदेश के आधा दर्जन अस्पतालों में जाने और हर एक की व्यवस्था, उनकी दशा और दिशा, उनकी नीति और नीयत को करीब से देखने के बाद ये शेर मेरे माथे पर किसी बयान की तरह चस्पा हो गया है।

विगत 11 जून को 63 साल की उम्र में मेरे पिता का कैंसर से देहांत हो गया। लगभग एक साल पहले मार्च के महीने में शुरू हुई एक लड़ाई सिर्फ़ पंद्रह महीनों में समाप्त हो गई। लड़ाई जो शुरुआत में तो एक बीमारी के ख़िलाफ़ नज़र आई, लेकिन धीरे-धीरे मालूम चला कि मैं और मेरा परिवार इस राज्य या कहूं कि इस देश की चरमराई हुई मेडिकल व्यवस्था से युद्ध लड़ रहा था। व्यवस्था जहाँ मरीज़ से उसकी तक़लीफ़ से पहले उसकी मासिक आय पूछी जाती है। जहाँ रोगी को एडमिट करने से पूर्व ही एक मोटी, भारी-भरकम रकम जमा करवा ली जाती है। जहाँ 10 रूपए की दवाई 1000 रूपए में बेची जाती है। जहाँ डॉक्टर कम, अकाउंटेंट ज़्यादा हैं। जहाँ कदम कदम पर जांच है। न शर्म है, न लाज है। जहाँ औसत से भी कम कौशल रखने वाले मेडिकल स्टाफ़ हैं। रेलवे स्टेशनों को मात कर देने वाली गंदगी है। मर चुकी संवेदनाएं हैं। ठूठ हो चुकी इंसानियत है। और जहाँ इलाज नहीं, केवल और केवल बीमारियां हैं।

मेरे पिता का इलाज भोपाल के होशंगाबाद रोड स्थित एक अस्पताल में हुआ। अस्पताल - जहाँ सबसे पहले तो एक जनरल सर्जन ने मेरे पिता की कैंसर से जुड़ी सर्जरी की। एक ऐसा कृत्य जो देश-दुनिया की किसी भी मेडिकल गाइडलाइन्स के अनुरूप नहीं था। इस डॉक्टर ने ऑपरेशन के पूर्व या दौरान किसी भी ऑन्कोलॉजिस्ट (कैंसर स्पेशलिस्ट) से बात नहीं की। और फिर ऑपरेशन के बाद प्राप्त हुई पोस्ट-बायोप्सी रिपोर्ट को देखकर हमें घर भेज दिया। इस घटनाक्रम के बहुत बाद में हमें ज्ञात हुआ कि उस पोस्ट-बायोप्सी रिपोर्ट में साफ़ तौर पर कैंसर फैल चुकने के संकेत थे, लेकिन इसके बावजूद डॉक्टर ने हमें न कीमोथेरेपी की सलाह दी और न रेडिएशन की। इंडियन कॉउन्सिल ऑफ़ मेडिकल रिसर्च की गाइडलाइन के अनुसार कैंसर की सर्जरी के बाद आसपास के लिम्फ नोड्स को डाइसेक्शन के लिए भेजा जाता है। यह कैंसर की स्टेजिंग और मैनेजमेंट के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है। लेकिन इस कदम को बड़ी लापरवाही से डॉक्टर और अस्पताल प्रबंधन ने नज़रअंदाज़ कर दिया। इसका सुबूत है वो पोस्ट-बायोप्सी रिपोर्ट जिसमें साफ़ अक्षरों में लिखा हुआ है - 'नो लिम्फ नोड्स सब्मिटेड।'

छह महीने बाद पिता को पीठ में कुछ दर्द हुआ तो हम उन्हें लेकर भोपाल के होशंगाबाद रोड स्थित उसी अस्पताल में पहुंचे और उसी डॉक्टर को फिर से दिखाया। कुछ देर अपने हाथों से पिता का शरीर टटोलने के बाद वह घबराते हुए बोला - कैंसर फैल गया है। आप तुरंत फलां अस्पताल चले जाइये। फलां अस्पताल, भोपाल शहर का वह कैंसर अस्पताल है जो अपने इलाज के लिए कम और अपनी रीढ़ तोड़ देने वाली फ़ीस के लिए ज़्यादा मशहूर है। मेरे भोले-भाले पिता छह महीनों तक लगातार इस डॉक्टर को फोन लगाते रहे, पूछते रहे कि क्या उन्हें दिखाने आना चाहिए, क्या उन्हें कोई दवा लेनी चाहिए, क्या उन्हें कुछ ख़ास चीज़ें खानी चाहिए, क्या उन्हें कोई परहेज करना चाहिए। लेकिन इस डॉक्टर ने न उन्हें बुलाया, न उन्हें कोई दवाई बताई, न कोई परहेज बताए, न डाइट चार्ट दिया।

छह महीने बाद जब कैंसर फैलने की जानकारी हमें मिली तो हम भोपाल के इंद्रपुरी स्थित एक अस्पताल पहुंचे। यहाँ एक और बार पिता की बायोप्सी हुई और मालूम चला कि जो कैंसर छह महीने पहले लोकलाइज़्ड था, अब वह मेटास्टेटिस हो चुका है, यानी फैल चुका है। साफ़ था कि उस एक डॉक्टर की भूल, भूल या अपराध?, अपराध या पाप? की वजह से मेरे पिता की बीमारी, उनका दर्द, उनकी तकलीफ़ बढ़ गई थी। इसके बाद पिता की एक और सर्जरी हुई। और फिर उसके बाद कीमो और फिर रेडिएशन। बहुत आश्चर्य था कि इस इलाज के दौरान मेरे पिता के शरीर में कोई साइड इफ़ेक्ट देखने को नहीं मिले। इसका कोई भी संतोषजनक जवाब भोपाल के इंद्रपुरी स्थित अस्पताल प्रबंधन ने नहीं दिया। एक महीने बाद हमें फिर यहाँ बुलाया गया और किसी भी तरह की जांच नहीं करवाई गई। फिर तीन महीने बाद पिता को अचानक खांसी चलने लगी। इस समस्या को लेकर जब हम अस्पताल पहुंचे तो बताया गया की कैंसर लंग्स में पहुँच गया है। अब ये कौनसा कैंसर है इसकी जांच के लिए भोपाल के अरेरा कॉलोनी स्थित एक अस्पताल में पिता की फिर से बायोप्सी हुई। इस जांच से बाहर आने के बाद पिता ने बताया कि अंदर डॉक्टर के आसपास मौजूद स्टाफ़ को किसी भी मेडिकल इक्विपमेंट की जानकारी नहीं थी। उन्होंने स्टाफ़ को आपस में बातचीत करते सुना था कि - 'हम लोगों ने तो कभी बायोप्सी की ही नहीं है।'

फिर कुछ दिन बाद बायोप्सी की रिपोर्ट आई। इसके बाद पिता का पेट स्कैन हुआ(कैंसर के मामले में सबसे बड़ी और महंगी जांच यही है।) पेट स्कैन की रिपोर्ट में मुझे बताया गया कि कैंसर पिता के पूरे शरीर में फैल गया है। और उनके पास बस तीन महीने हैं। इस बीच पिता बेहद कमज़ोर हो गए। दिन में पांच-दस किलोमीटर आसानी से चल लेने वाले व्यक्ति का खड़े रह पाना दुश्वार हो गया। उनका वज़न लगातार गिरने लगा। चेहरा लटक गया। उन्होंने पहले खाना छोड़ा, फिर बोलना, फिर पानी पीना छोड़ा और फिर अपनी आँखें मूँद ली। अपने अंतिम दिनों में उन्होंने न अपने बेटों से बात की, न अपनी पत्नी से। उन्होंने हमें देखा तक नहीं। डॉक्टरों ने उन्हें कीमोथेरेपी देने से मना कर दिया और हमें घर जाने की सलाह दी। यह सलाह उस अस्पताल से आई जहाँ पिता अपने आख़िरी दिनों में एडमिट रहे। और जहाँ से हमें शायद बस इसलिए बाहर कर दिया गया क्योंकि हमने 'आई. सी. यू.' में पिता को एडमिट करने की इजाज़त अस्पताल प्रबंधन को नहीं दी। असीम दर्द झेलते हुए भी पिता शांत लेटे रहे। उनकी आँखों के कोनों से पानी आते दिखाई देता। वे दर्द में थे, और कुछ कह नहीं पा रहे थे। हम उस पानी को पोंछ देते। हम दर्द में थे, और कुछ कह नहीं पा रहे थे।

बहुत कठिन समय था और इस कठिन समय में हम उन्हें भोपाल से होशंगाबाद (गृह निवास) लाना चाहते थे। ऐसे हालात में भी भोपाल के होशंगाबाद रोड स्थित अस्पताल ने हमें एक ऐसी एम्बुलेंस मुहैय्या करवाई जो असल में एक टवेरा गाड़ी थी, जिसके पीछे एक सख्त गद्दे वाली लोहे की बेंच सरि की बेड डली हुई थी। न उसमें ऐ.सी. था, न मेडिकल से जुड़ी कोई भी व्यवस्था, और न ही एम्बुलेंस चलाने में पारंगत कोई ड्राइवर। अपने पूरे शरीर समेत विश्व की सबसे खतरनाक बीमारियों में से एक से लड़ते हुए मेरे पिता ने एक घटिया स्तर की कथित एम्बुलेंस में लगभग डेढ़ घंटे सफ़र किया और आख़िरकार होशंगाबाद स्थित एक निजी अस्पताल में आ पहुंचे। अस्पताल जहाँ का 'आईसीयू' वार्ड किसी भी सरकारी अस्पताल के जनरल वार्ड से अधिक गया-बीता था। यहाँ आने के कुछ ही घंटों बाद डॉक्टरों ने हमें कुछ दवाइयां लेने के लिए नीचे भेज दिया। जब तक हम ऊपर लौटे इस महान राष्ट्र की महान मेडिकल व्यवस्था ने मेरे पिता को परास्त कर दिया। मेरा और मेरे भाई का सर झुक गया। हम हार चुके थे। और हमारे लिए दुनिया की हर एक जीत अर्थहीन हो चुकी थी। जिस कलंकित एम्बुलेंस से हम पिता को भोपाल से होशंगाबाद लाए थे। उसी से हम उन्हें अस्पताल से अपने घर लेकर गए। सफ़ेद कपड़ों में लिपटे पिता को हमने एम्बुलेंस से बाहर निकाला और उन्हें सीढ़ियों से घर के अंदर ले जाने लगे। एम्बुलेंस पलटी और अस्पताल के लिए लौट गई। भीगी आँखों से मैंने एम्बुलेंस के पीछेवाले गेट पर लिखी जो बात पढ़ी, वह ये थी - 'मानवीय सेवा, ईश्वरीय प्रार्थना।'

भारत की जनसंख्या से संभावनाओं की खोज

विश्व जनसंख्या दिवस पर विशेष

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

'चाइना प्लस वन' नीति का उल्लेख करना यहां अत्यंत महत्वपूर्ण है। अमेरिका और यूरोप के कई देश चीन पर अपनी अत्यधिक निर्भरता से परेशान हो चुके हैं, खासकर कोविड-19 महामारी के बाद जब वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला चरमरा गई थी।इसके फलस्वरूप अब बड़ी कंपनियाँ एक वैकल्पिक विनिर्माण केंद्र की तलाश में हैं, और भारत इस आवश्यकता को पूरा करने में सबसे उपयुक्त उम्मीदवार बनकर सामने आया है। भारत का लोकतांत्रिक ढांचा, अंग्रेज़ी बोलने वाली श्रमशक्ति, अपेक्षाकृत कम उत्पादन लागत, और बाज़ार की उपलब्धता उसे इस प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनाती है। ऐपल, सैमसंग, टेस्ला जैसी कंपनियाँभारत में अपने निवेश को बढ़ा रही हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि 'चाइना प्लस वन' की रणनीति भारत के पक्ष में काम कर रही है।

भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी पहचान यदि एक है, तो वह है इसकी जनसंख्या। यह जनसंख्या कभी बोझ मानी जाती थी, तो कभी अभिशाप के रूप में प्रस्तुत की जाती रही, लेकिन बदलते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य और तकनीकी उन्नयन के युग में आज यही जनसंख्या भारत की सबसे बड़ी पूंजी बनकर उभर रही है। जहाँ एक ओर यह विशाल मानव संसाधन वैश्विक औद्योगिक जगत को सस्ती और दक्ष श्रमशक्ति उपलब्ध करवा रहा है, वहीं दूसरी ओर यह घरेलू बाज़ार के विशाल उपभोक्ता वर्ग के रूप में भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार बन रहा है।

भारत आज दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 2023 में भारत ने चीन को पीछे छोड़ते हुए सबसे अधिक आबादी वाला देश बनकर वैश्विक ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। लेकिन यह केवल आंकड़ों की दौड़ नहीं है, बल्कि उस जनशक्ति की उपस्थिति है जो 21वीं सदी में भारत को वैश्विक आर्थिक मंच पर नेतृत्व की भूमिका दिला सकती है। जिस प्रकार किसी उद्योग के लिए कच्चा माल ज़रूरी होता है, उसी प्रकार किसी राष्ट्र के विकास के लिए श्रमशक्ति, उपभोक्ता और नवाचार की क्षमता आवश्यक होती है। भारत इन तीनों मानकों पर खरा उतरता दिखाई दे रहा है।

घरेलू बाज़ार की विशालता भारत की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनकर उभरी है। भारत की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा उपभोक्ता वर्ग में आता है, जो विभिन्न उत्पादों और सेवाओं के लिए निरंतर मांग पैदा करता है। इस मांग ने भारत को विदेशी निवेश के लिए एक आकर्षक गंतव्य बना दिया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अब भारत को केवल एक उत्पादन केंद्र के रूप में नहीं देखतीं, बल्कि एक बड़े उपभोग बाज़ार के रूप में भी देखती हैं। ई-कॉमर्स, एफएमसीजी, ऑटोमोबाइल, हेल्थकेयर, टेलीकॉम और तकनीकी क्षेत्र में इस घरेलू बाज़ार ने जितनी तेजी से प्रसार किया है, वह वैश्विक मंदी के दौर में भीभारत की आर्थिक स्थिरता का आधार रहा है। जब अमेरिका और यूरोप में मांग घट रही थी, तब भारत में बढ़ती खपत ने अर्थव्यवस्था को स्थायित्व दिया।

इस जनसंख्या का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है- सस्ता और कुशल श्रमिक बल। भारतकी युवा आबादी, जो 15 से 35 वर्ष की आयु वर्ग में है, दुनिया की सबसे बड़ी श्रमशक्ति बनती जा रही है। यह श्रमिक वर्ग केवल संख्या में ही नहीं, बल्कि दक्षता और तकनीकी समझ में भी सक्षम होता जा रहा है। सरकार द्वारा चलाए गए कौशल विकास मिशन (स्किल इंडिया मिशन), प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) और आईटीआई जैसे संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षित युवाओं की बड़ी संख्या तैयार हो रही है जो उद्योगों की मांग के अनुसार प्रशिक्षित हैं। यही कारण है कि इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, कपड़ा, आईटी और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों में भारत न केवल उत्पादन केंद्र बन रहा है, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अहम भूमिका निभा रहा है।

'चाइना प्लस वन' नीति का उल्लेख करना यहां अत्यंत महत्वपूर्ण है। अमेरिका और यूरोप के कई देश चीन पर अपनी अत्यधिक निर्भरता से परेशान हो चुके हैं, खासकर कोविड-19 महामारी के बाद जब वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला चरमरा गई थी।इसके फलस्वरूप अब बड़ी कंपनियाँ एक वैकल्पिक विनिर्माण केंद्र की तलाश में हैं, और भारत इस आवश्यकता को पूरा करने में सबसे उपयुक्त उम्मीदवार बनकर सामने आया है। भारत का लोकतांत्रिक ढांचा, अंग्रेज़ी बोलने वाली श्रमशक्ति, अपेक्षाकृत कम उत्पादन लागत, और बाज़ार की उपलब्धता उसे इस प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनाती है। ऐपल, सैमसंग, टेस्ला जैसी कंपनियाँभारत में अपने निवेश को बढ़ा रही हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि 'चाइना प्लस वन' की रणनीति भारत के पक्ष में काम कर रही है।

भारत की जनसंख्या केवल श्रम या उपभोग शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नवाचार और उद्यमिता की भूमि भी बन चुकी है। युवा आबादी में स्टार्टअप को लेकर

उत्साह, डिजिटल साक्षरता और तकनीकी समझ ने भारत को स्टार्टअप हब में बदल दिया है। 2024 तक भारत में 100 से अधिक यूनिकॉर्न (वो स्टार्टअप जिनकी वैल्यू 1 बिलियन डॉलर से अधिक है) बन चुके हैं। डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा, हेल्थटेक, फिनटेक और एग्रीटेक जैसे क्षेत्रों में भारतीय युवाओं ने जो नवाचार किए हैं, वे वैश्विक स्तर पर सराहे जा रहे हैं। यहाँ की बड़ी जनसंख्या एक टेस्टिंग और इम्प्लीमेंटेशन लैब की तरह कार्य करती है जहाँ नए विचारों को प्रयोग और विस्तार का व्यापक अवसर मिलता है।

भारत की जनसंख्या ने उसे वैश्विक मंदी के समय भी अपेक्षाकृत स्थिर और सशक्त अर्थव्यवस्था बनाए रखा है। जब दुनिया के कई विकसित देश खपत की कमी से जूझ रहे थे, भारत में बढ़ती उपभोक्ता मांग और लोकलाइज्ड सप्लाई चेन ने इसे वैश्विक आर्थिक धारा से जोड़े रखा। यहाँ की जनसंख्या ने न केवल उत्पादों की खपत बढ़ाई, बल्कि स्थानीय उत्पादन को भी गति दी। आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसे कार्यक्रमों को सफल बनाने में भी इसी जनशक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका रही। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती क्रय शक्ति, शहरीकरण की गति, और डिजिटल पहुँच के कारण अब भारत के सबसे दूरस्थ हिस्से भी वैश्विक बाज़ार से जुड़ चुके हैं।

हालांकि, यह भी सत्य है कि बड़ी जनसंख्या के साथ कुछ चुनौतियाँ भी आती हैं- जैसे संसाधनों पर दबाव, रोजगार सृजन की बाध्यता, और शहरी ढाँचागत सुविधाओं की आवश्यकता। किंतु यदि इन चुनौतियों का रणनीतिक समाधान किया जाए, तो यही जनसंख्या भारत को अगली सदी की महाशक्ति बनाने की दिशा में ले जा सकती है। सरकार को चाहिए कि वह शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास और नवाचार के क्षेत्र में निरंतर निवेश करे ताकि इस जनशक्ति को उत्पादकता में बदला जा सके।

भारत की जनसंख्या अब केवल आंकड़ों का खेल नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और वैश्विक रणनीति का केंद्रबिंदु बन चुकी है। यह वह भूमि है जहाँ बाज़ार की संभावनाएँ, श्रमशक्ति की सृजनशीलता, और विकास की जड़ों में ऊर्जा मौजूद है। यदि नीति निर्माता, उद्योग जगत और समाज मिलकर इस जनसंख्या को एक अवसर के रूप में देखें और उसे सही दिशा में गतिशील करें, तो यह न केवल भारत की आर्थिक प्रगति का इंजन बनेगी, बल्कि विश्व समुदाय में भारत को नई पहचान भी दिलाएगी।

जनसंख्या वृद्धि को केवल नियंत्रण या रोकने की आवश्यकता नहीं, बल्कि उसे संवारने, सशक्त बनाने और नियोजित रूप से दिशा देने की आवश्यकता है। भारत की यह विशाल जनसंख्या, यदि सही नीतियों और दृष्टिकोण से संचालित हो, तो वह दुनिया की सबसे बड़ी विकास यात्रा की धुरी बन सकती है। यह जनशक्ति ही भारत की सबसे बड़ी 'संपत्ति' है न कि बोझ, जिस पर 21वीं सदी के भारत का भविष्य टिका है।

जनसंख्या विस्फोट: कृषि संकट और खाद्य सुरक्षा की जंग

विश्व जनसंख्या दिवस पर विशेष

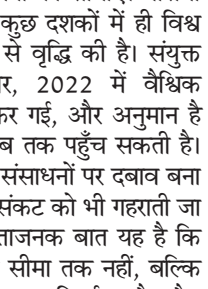

ममता कुशवाहा

वर्तमान युग में मानव सभ्यता एक दोराहे पर खड़ी है, एक ओर जनसंख्या विस्फोट का दबाव और दूसरी ओर खाद्य संसाधनों की सीमाएं। बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के पहले कुछ दशकों में ही विश्व जनसंख्या ने अकल्पनीय दर से वृद्धि की है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार, 2022 में वैश्विक जनसंख्या 8 अरब को पार कर गई, और अनुमान है कि यह 2050 तक 9.7 अरब तक पहुँच सकती है। यह विस्फोटक वृद्धि न केवल संसाधनों पर दबाव बना रही है, बल्कि खाद्य सुरक्षा के संकट को भी गहराती जा रही है। इससे भी अधिक चिंताजनक बात यह है कि यह संकट केवल उत्पादन की सीमा तक नहीं, बल्कि वितरण, पोषण गुणवत्ता, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता जैसे अनेक जटिल आयामों में उलझ चुका है।

बढ़ती मांग और घटती उपजाऊ भूमि: एक विषम संतुलन

जनसंख्या वृद्धि सीधे तौर पर खाद्यान्न की मांग को बढ़ाती है। जैसे-जैसे लोगों की संख्या बढ़ती है, वैसे-वैसे भोजन, जल, वस्त्र और आवास की आवश्यकता भी बढ़ती है। परंतु यह मांग जितनी स्वाभाविक है, उतनी ही असंतुलित भी हो चली है, क्योंकि खाद्य उत्पादन के लिए आवश्यक मूलभूत संसाधनों- भूमि, जल, उर्वरक और जलवायु की सीमाएं स्पष्ट होती जा रही हैं। औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण उपजाऊ कृषि भूमि का तेजी से क्षरण हुआ है। गांवों की जमीनें शहरों की कोठियों में बदल रही हैं, और खेतों पर कंक्रीट का जंगल उग आया है।

इसके अतिरिक्त, अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग,भूमिगत जल के अंधाधुंध दोहन, और पारंपरिक फसल चक्र की उपेक्षा ने मिट्टी की उर्वरता को क्षतिग्रस्त किया है। जलवायु परिवर्तन के चलते अकाल, बाढ़ और अनियमित वर्षा की घटनाएँ बढ़ गई हैं, जिससे फसलें बर्बाद हो रही हैं। रिपोर्टें बताती हैं कि हर वर्ष विश्व में लगभग 24 अरब टन उपजाऊ मिट्टी का क्षरण हो रहा है, और 2050 तक प्रति व्यक्ति कृषि भूमि की उपलब्धता 0.5 हेक्टेयर से भी नीचे जा सकती है। भारत जैसे देशों में तो यह संकट और भी तीव्र है, जहाँ 60त्न कृषि वर्षा पर निर्भर है और 30त्न ज़मीन पहले से ही जल-नष्ट या क्षरण की स्थिति में है।

खाद्य असमानता और पोषण का गहराता संकट

एक ओर भूखमरी की मार है, दूसरी ओर भोजन की बर्बादी। यह विडंबना ही है कि वैश्विक खाद्य उत्पादन कुल मानव आवश्यकताओं से अधिक है, फिर भी 80 करोड़ से अधिक लोग कुपोषण या भुखमरी का शिकार हैं। वैश्विक दक्षिण, विशेषकर अफ्रीका और दक्षिण एशिया के देशों में यह संकट और भी विकराल रूप में है।भारत में राष्ट्रीय पारिवारिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के अनुसार, हर तीसरा बच्चा या तो अविकसित है या कुपोषित। वहीं दूसरी ओर, अमेरिका और यूरोप जैसे विकसित देशों में प्रतिवर्ष करोड़ों टन खाद्यान्न बर्बाद होता है।

यह असमानता केवल सामाजिक या आर्थिक नहीं, बल्कि संस्थागत और राजनीतिक भी है। खाद्य वितरण तंत्र में भ्रष्टाचार, भंडारण की अव्यवस्था और लॉजिस्टिक्स की कमी के कारण गरीबों तक अन्न नहीं पहुँचता। यह संकट केवल पेट भरने तक सीमित नहीं है, बल्कि पोषण सुरक्षा से भी जुड़ा है अर्थात लोगों को केवल कैलोरी नहीं, बल्कि प्रोटीन, सूक्ष्म पोषक तत्व (माइक्रोन्यूट्रिएंट्स), विटामिन और खनिज भी चाहिए।

जैव विविधता का संकट: कृषि की जड़ें खोती जा रही हैं

खाद्य सुरक्षा का यह संकट उस समय और भी गहरा हो जाता है जब हम जैव विविधता की गिरावट को ध्यान में रखते हैं। पारंपरिक खेती में हजारों प्रकार की फसलें और किस्में उगाई जाती थीं, जो स्थानीय जलवायु और मिट्टी के अनुरूप थीं। परंतु आधुनिक कृषि में केवल कुछ मुट्ठीभर फसलों (जैसे गेहूं, चावल, मक्का, सोयाबीन) का प्रभुत्व हो गया है। वैश्विक खाद्य आपूर्ति का 60 प्रतिशत से अधिक केवल तीन फसलों पर निर्भर है। इससे न केवल पारिस्थितिक तंत्र कमजोर हुआ है, बल्कि बीजों की विविधता भी लगभगविलुप्ति के कगार पर है। यह जैव विविधता संकट परागण करने वाले कीटों, मिट्टी में रहने वालेसूक्ष्मजीवों और जलवायु सहिष्णु फसलों को भी प्रभावित करता है। जब एक फसल की विविध किस्में समाप्त हो जाती हैं, तो वह नई जलवायु चुनौतियों या कीटों के प्रति असहाय हो जाती है। इससे खाद्य उत्पादन और कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछली शताब्दी में कृषि विविधता का लगभग 75 प्रतिशत भाग लुप्त हो गया है।

सतत कृषि और तकनीकी नवाचार: भविष्य की आशा

इस संकट के बीच आशा की किरण बनकर उभरती है सतत कृषि (Sustainable Agriculture) और नवीन तकनीकों की भूमिका। सतत कृषि वह दृष्टिकोण है जोपर्यावरण, आर्थिक व्यवहार्यता और सामाजिक न्याय- तीनों के बीच संतुलन स्थापित करता है। इसमें फसल चक्र, जैविक खाद, कृषि वानिकी, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और स्थानीय ज्ञान का उपयोग शामिल है। उदाहरण के लिए, भारत में 'ज़ीरो बजट नैचुरल फार्मिंग' और 'परंपरागत कृषि विकास योजना' जैसे कार्यक्रम किसानों को रासायनिक खेती से जैविक खेती की ओर प्रेरित कर रहे हैं। तकनीकी प्रगति भी इस संकट से लड़ने का एक सशक्त हथियार है। ड्रोन आधारित सिंचाई, सटीक कृषि (precision farming), कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित फसल निगरानी, जीआईएस आधारित भूमि उपयोग योजना, और आनुवंशिक फसलों (genetically edited, not modified) जैसे नवाचार उत्पादन को बढ़ा सकते हैं। लेकिन यह ध्यान रखना आवश्यक है कि तकनीक केवल तभी प्रभावी होती है जब वह समावेशी हो– अर्थात छोटे और सीमांत किसानों तक उसकी पहुँच सुनिश्चित की जाए।

इसके अलावा, जल संरक्षण और माइक्रो-इरिगेशन जैसी विधियाँ, जैसे कि टपक सिंचाई और स्प्रिंकलर, जल संकट को हल कर सकती हैं। इसी तरह, मिलेट्स (ज्वार, बाजरा, कोदो आदि) जैसी पारंपरिक और जल-संवेदनशील फसलें फिर से लोकप्रिय हो रही हैं, जो न केवल पोषण के लिहाज से लाभकारी हैं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में भी उगाई जा सकती हैं। भारत सरकार द्वारा 2023 को 'मिलेट्स वर्ष' घोषित करना इस दिशा में एक सराहनीय पहल रही है।

नीति निर्माण, वैश्विक सहयोग और जन-जागरूकता की आवश्यकता

खाद्य सुरक्षा केवल वैज्ञानिक या तकनीकी मुद्दा नहीं है, बल्कि यह एक गहन सामाजिक-राजनीतिक प्रश्न भी है। इसके समाधान के लिए केवल कृषि में निवेश या तकनीकी बदलाव पर्याप्त नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर सहयोग, नीतिगत सुधार और जन-सहभागिता की आवश्यकता है। नीति-निर्माताओं को न केवल छोटे किसानों की आय सुरक्षित करनी होगी, बल्कि जैव विविधता की रक्षा, महिला किसानों की भागीदारी, और जलवायु अनुकूल खेती को प्राथमिकता देनी होगी।

वैश्विक मंचों पर जैसे संयुक्त राष्ट्र का 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स' (SDGs) में खाद्य सुरक्षा और सतत कृषि को विशेष लक्ष्य बनाया गया है। इनमें 'Zero Hunger' और 'Climate Action' जैसे लक्ष्य आपस में जुड़े हुए हैं। लेकिन केवल वैश्विक घोषणाएँ पर्याप्त नहीं होंगी; जब तक राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर इन्हें क्रियान्वित करने की इच्छाशक्ति और व्यवस्था नहीं होगी, तब तक बदलाव अधूरा रहेगा।

साथ ही, नागरिकों की भागीदारी भी अत्यंत आवश्यक है। उपभोक्ता यदि स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहन दें, खाद्य अपव्यय को रोकें और पोषणयुक्त भोजन कीमाँग करें, तो बाज़ार भी उसी दिशा में परिवर्तित होगा। शहरी क्षेत्रों में 'कम्युनिटी गार्डन' और 'टेरस फार्मिंग' जैसी पहलें न केवलपर्यावरण-संवेदनशील होती हैं, बल्कि खाद्य स्वराज की ओर भी एक कदम होती हैं।

भविष्य की ओर एक सुदृढ़ दृष्टि

विश्व जनसंख्या और खाद्य सुरक्षा का यह संकट हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। यह केवल कृषि का प्रश्न नहीं, बल्कि यह एक ऐसासमवेत चिंतन है, जिसमें अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, पर्यावरण विज्ञान और तकनीक सभी का योगदान आवश्यक है। यदि समय रहते हमने इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए, तो भविष्य की पीढ़ियाँ हमें खाद्य संकट की विरासत के लिए दोषी ठहराएँगी।

परंतु यदि सतत कृषि, जैव विविधता की रक्षा, तकनीकी नवाचार और न्यायसंगत नीतियों को एकजुट कर आगे बढ़ा जाए, तो यह संकट एक अवसर में भी बदल सकता है- एक ऐसे अवसर में जो हमें प्रकृति के साथ संतुलन में जीना सिखाए, जो वैश्विक असमानताओं को मिटाए, और जो खाद्य को केवल वस्तु नहीं, बल्कि जीवन की गरिमा से जोड़ सके। इस राह में सबसे बड़ी कुंजी है, समय की चेतना, नीति की दृढ़ता, और जन की सहभागिता। यही हमारे भविष्य की खाद्य सुरक्षा की सबसे सशक्त नींव हो सकती है।

पीजी कॉलेज एवं कन्या महाविद्यालय में गुरु पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया

धार। शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धार एवं कन्या महाविद्यालय धार में रतन रुप द्वारा गुरु पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पीजी कालेज प्राचार्य श्री बघेल एवं कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य श्री फड़के एवं समस्त स्टाफ मौजूद था। कार्यक्रम के मुख्य सूत्रधार पूर्व छात्र नेता दीपक शुक्ला एवं मोहन जामोद और मानसिंह मसर थे।

अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं करने वाले बीएलओ पर होगी कार्यवाही : कलेक्टर

- सारनी नपा सभागार में बीएलओ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, मध्यप्रदेश द्वारा जारी निर्देशों के परिपालन में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी की अध्यक्षता में आमला विधानसभा क्षेत्र क्रमांक-130 (अ.जा.) अंतर्गत बीएलओ प्रशिक्षण कार्यक्रम गुरुवार को नगर पालिका परिषद सारनी के सभागार में आयोजित किया गया। बैठक में अनुविभागीय अधिकारी शैलेन्द्र बड़ौनियों एवं निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी आमला सहित सभी बीएलओ उपस्थित रहें। यह प्रशिक्षण मतदान केन्द्र क्रमांक 51 से 97 तक के बीएलओ के लिए द्वितीय बेंच के अंतर्गत आयोजित किया गया। जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर श्री सतीश साहू, श्री दिलीप कुमार हाथिया एवं विधानसभा स्तरीय मास्टर ट्रेनर रामप्रसाद जौंजारे, मनोज कुमार बनकर द्वारा बीएलओ को निर्वाचन प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में तहसीलदार एवं सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी संतोष पधौरिया की उपस्थिति रही। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बीएलओ एवं बीएलओ सुपरवाइजरों को निष्ठापूर्वक कार्य करने के निर्देश देते हुए कहा कि बीएलओ आपसी समूह बनाकर कठिन प्रश्नों का अभ्यास करें एवं अपने कार्य को त्रुटिरहित बनाएं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जो बीएलओ अपने दायित्वों का निर्वहन ठीक से नहीं कर रहे हैं, उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। अनुविभागीय अधिकारी (रा.) श्री बडोनिया एवं निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी आमला द्वारा बीएलओ के कर्तव्य, संविधान की धाराएं एवं निर्वाचन कार्य से संबंधित सम्पुर्ण जानकारी से अवगत कराया गया। मास्टर ट्रेनर द्वारा बीएलओ को निर्वाचक नामावली के त्रुटिरहित बनाने के निर्देशों में निर्वाचक नामावली तैयार करने संबंधी प्रक्रिया, घर-घर जाकर सर्वे कर निर्वाचक की जानकारी का सत्यापन करना, मृत, स्थानांतरित, दोहरी प्रविष्टि की जानकारी तथा राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि, बूथ लेवल एजेंट से समन्वय, फार्म-6, 7 व 8 एवं बीएलओ एप आदि के संबंध में बारीकियों से अवगत कराया गया। साथ ही प्रशिक्षण में प्रातः 9 बजे से पंजीयन कार्य, किट वितरण किया गया।

ओबीसी महासभा ने जातिगत जनगणना से लेकर आरक्षण तक उठाई 17 सूत्रीय मांगें

- राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन, मांगे पूरी नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी

बैतूल। ओबीसी महासभा ने गुरुवार 10 जुलाई को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री सहित अन्य जिम्मेदार पदाधिकारियों के नाम जिला प्रशासन को 17 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में ओबीसी समाज के हक और अधिकारों को लेकर कई अहम मांगें उठाई गईं। ज्ञापन में सबसे अहम मांग यह की गई कि वर्ष 2027 की होने वाली सामान्य जनगणना में जातिगत जनगणना का कॉलम जोड़ा जाए ताकि ओबीसी वर्ग की वास्तविक जनसंख्या और स्थिति सामने आ सके। साथ ही देश में एससी, एसटी, ओबीसी वर्ग के लिए शासकीय विभागों में लगभग 70 लाख रिक्त पदों की बैकलॉग भर्ती शीघ्र की जाए। मध्यप्रदेश में ओबीसी वर्ग के लिए जो 13 प्रतिशत पदों को होल्ड पर रखा गया है, उन्हें अनहोल्ड कर 27 प्रतिशत आरक्षण लागू करते हुए चयनित अभ्यर्थियों को तत्काल नियुक्त किया जाए। ज्ञापन देने वालों में जिलाध्यक्ष नरेश मालवीय के नेतृत्व में ओबीसी महासभा के जिला उपाध्यक्ष हिमांशु सोनी, महिला जिला अध्यक्ष अंजू यादव, सदन कुरावले और सतीष उइके शामिल रहे। महिला जिला अध्यक्ष अंजू यादव ने बताया कि ज्ञापन में ओबीसी वर्ग के छात्रों के लिए मेडिकल, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट जैसे सभी प्राइवेट कॉलेजों में शासकीय फीस पर प्रवेश की व्यवस्था करने की मांग की गई है। जातिगत भेदभाव और बढ़ते अत्याचार को रोकने के लिए ओबीसी एट्रोसिटी एक्ट लागू करने की भी प्रमुख मांग रखी गई है। ग्वालियर हाई कोर्ट खंडपीठ सहित सभी जिला और उच्च न्यायालयों में बाबा साहब की प्रतिमा लगाने की मांग भी की गई है। ओबीसी महासभा ने चेतावनी देते हुए कहा कि हैदराबाद, तेलंगाना में पंचायत चुनाव से पहले 42 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण लागू नहीं किया गया तो महासभा पंचायत चुनावों का बहिष्कार करेगी। साथ ही शासकीय नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में भी 42 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण लागू किया जाए, अन्यथा ओबीसी महासभा पूरे देश में आंदोलन करेगी। ओबीसी महासभा ने कहा कि यदि मांगों पर शीघ्र कार्यवाही नहीं की गई तो समाज का आक्रोश सडक़ों पर उतरकर राष्ट्रीय स्तर पर बड़े आंदोलन के रूप में सामने आएगा।

गुरूपूर्णिमा पर मंदिरों में हुई पूजा-अर्चना, दादाजी की कुटी में बंटी टिक्कड़-चटनी

दादाजी की कुटी पहुंचकर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने की पूजा-अर्चना

बैतूल। जिले भर में गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया। खंजनपुर स्थित दादाजी की कुटी में सुबह से ही पूजा-अर्चना करने के लिए भारी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। कतारबद्ध तरीके से श्रद्धालुओं ने कुटी के अंदर प्रवेश कर मत्था टेका। इस मौके पर नवनिर्वाचित भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष और बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार, सीसीबी के पूर्व अध्यक्ष विनय भावसार, कोठीबाजार मंडल अध्यक्ष विक्रम वैद्य, गंज मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा भी दादाजी की कुटी पहुंचे और उन्होंने पूरे विधि विधान के साथ पूजा अर्चना की। दादाजी धूनीवाले ट्रस्ट दादाजी कुटी के अध्यक्ष प्रवीण पम्मू भावसार, ट्रस्ट के पदाधिकारी और दादा भक्तों ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री खण्डेलवाल के कुटी पहुंचने पर स्वागत कर उन्हें प्रसाद भेंट किया। वहीं दादाजी की कुटी में गुरूपूर्णिमा के दिन विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। गुरूपूर्णिमा को लेकर दादाजी की कुटी में व्यापक तैयारियां की गई थी। वहीं बैतूलबाजार, राठीपुर, बड़ोरा, टिकारी, सुरगांव, भडूस और दनोरा से श्रद्धालु निशान लेकर आए थे। दादाजी की कुटी में गुरूपूर्णिमा के अवसर पर प्रसादी के रूप में टिक्कड़, चटनी, हलवा, पुड़ी और सब्जी का वितरण किया गया। मंदिर समिति अध्यक्ष प्रवीण पम्मू भावसार ने बताया कि इस वर्ष गुरूपूर्णिमा के अवसर पर दादाजी की कुटी में 13 क्विंटल का टिक्कड़, 30 किलो की चटनी, 13 क्विंटल की सब्जी, 20 क्विंटल की पूड़ी और 1.50 क्विंटल का हलवा बनाया गया। प्रसादी के रूप में श्रद्धालुओं को टिक्कड़ चटनी वितरित की। शाम को दादाजी की कुटी में भजन संध्या का आयोजन भी किया गया।

भाजपा ने किया गुरूपूर्णिमा पर गुरुजनों का सम्मान

बैतूल। भाजपा के कार्यकर्ताओं द्वारा गुरुवार को गुरुपूर्णिमा का पर्व श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जिले के सभी संगठनात्मक 30 मंडलो में भाजपा कार्यकर्ताओ, पदाधिकारी और जनप्रतिनिधियों ने विभिन्न क्षेत्र के गुरुजनों, सभी पंथ के साधु संतों, पुजारी एवं आचार्यो का वस्त्र, श्रीफल एवं पुष्पमालाओं से सम्मान किया। सम्मान की इसी कडी में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने अपने ग्रह नगर में स्कूली समय में उनके शिक्षक रहे के.के.चौबे, पटेल सर, कोरी सर, जयसिंगपुरे सर और ज्योतिषाचार्य पं. कांत दिक्षीत के निवास पर पहुंचकर उनका शाल श्रीफल से सम्मान किया। वहीं भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने नगर के ब्रम्हकुमारी आश्रम, सतपाल आश्रम, फटटीवाले बाबा आश्रम व संस्थाओ में पहुंचकर गुरूओ का वंदन एवं बैतूलबाजार में आयोजित गुरूओ के सम्मान समारोह में शिक्षको का सम्मान किया। सम्मान समारोह में श्री पंवार ने कहा कि गुरू जीवन के अंधकार को हर कर प्रकाशमय मार्ग प्रशस्त करते है। वहीं विभिन्न मंडलो के जनप्रतिनिधियों और पदाधिकारीयों सहित कार्यकर्ताओ ने मंडलो पर गुरूपूजन का कार्यक्रम आयोजित कर गुरूओं, पुजारीयों, कला शिक्षको, खेल शिक्षको, रिटायर्ड शिक्षको भुम्काओं का शाल श्रीफल भेंट कर सम्मान किया। इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, विधायक डा. योगेश पंडाग्रे, मंडल अध्यक्ष विक्रम वैद्य, विकास मिश्रा, डा. अरूण जयसिंहपुरे सहित पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता मौजूद रहे।

गुरूजी जयसिंगपुरे के घर पहुंचे हेमंत, लिया आशीर्वाद

बैतूल। प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने गुरु पूर्णिमा के अवसर अपने गुरुजी जयसिंगपुरे मास्साब से मिलने घर पहुंचे। उन्होंने चरण छूकर आशीर्वाद लिया तथा उन्हें दीर्घायु होने की शुभकामनाएं प्रेषित की। इस दौरान आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार, पूर्व जिला अध्यक्ष बबला शुक्ला, मंडल अध्यक्ष विक्रम वैध, विकास मिश्रा, आमला मंडल महामंत्री प्रदीप ठाकुर, पार्षद संतोष भलावी, राजू मिश्रा, मंटू वर्मा, नवनीत मालवीय आदि उपस्थित थे।

मुलताई के 6 किसानों को मिलेंगे फसल बीमा के साढ़े तीन लाख रुपए

उपभोक्ता आयोग बैतूल का आदेश

बैतूल। मुलताई तहसील के ग्राम सावंगी, चिखलीकला, सोंडिया, सोनोरी व टेमझीरा-अ के 6 किसानों को फसल बीमा राशि के साढे तीन लाख रूपये का भुगतान स्टेट बैंक मुलताई, बैंक ऑफ महाराष्ट्र को सहकारी बैंक खेड़ीकोर्ट द्वारा करने के आदेश उपभोक्ता आयोग बैतूल के द्वारा दिया गया है। यह आदेश उपभोक्ता आयोग के अध्यक्ष न्यायाधीश विजय कुमार पाण्डेय व माननीय सदस्य चन्द्रशेखर माकोड़े द्वारा दिया गया है। एडवोकेट दिनेश यादव ने बताया कि बैंकों द्वारा किसानों का पटवारी हल्का नंबर व कृषि से संबंधित राजस्व दस्तावेजों की जानकारी पोर्टल पर सही दर्ज नहीं करने के कारण इन किसानों को फसल बीमा राशि नहीं मिली थी, उपभोक्ता आयोग बैतूल में प्रकरण दर्ज करने के बाद आयोग द्वारा दिये गये आदेश के अनुसार किसानों को अपनी बीमा राशि बैंकों से मिलेगी। आयोग ने अपने आदेश में कहा है कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की गाईडलाईन में कंडिका 35.5.7 में वित्तीय संस्थायें/बैंक के दायित्व के संबंध में प्रावधान किया है कि बैंक यह सुनिश्चित करें।

खरीफ सीजन में उन्नत खेती के लिए किसानों को सलाह

बैतूल। किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग द्वारा किसानों को खरीफ सीजन के लिए उपयुक्त तकनीकी सलाह दी गई है। कृषि विभाग के उप संचालक आनंद बडोनिया ने बताया कि खरीफ सीजन में किसानों द्वारा सोयाबीन, मक्का, धान, अरहर एवं अन्य फसलों की बुआई का कार्य पूर्ण हो चुका है। किसान भाई अब फसल 15 दिवस की हो जाने पर खरपतवार नाश दवा का छिडकाव करें और फसल की पत्तियां छितर गई है तो इल्लीमार दवा का छिडकाव आवश्य करें। किसानों को सलाह दी गई है कि अपने क्षेत्र की मिट्टी, जलवायु को ध्यान में रखते हुए फसल का चयन करें। फसल विविधीकरण करें, ताकि किसान विभिन्न जोखिमों से बच सकें। मिट्टी की संरचना में सुधार के लिए जैविक खाद का उपयोग करें। किसान दलहनी-तिलहनी फसलों की बुआई मेड़ नाली पद्धति या ब्रॉडबैंड फरो पद्धति से करें, ताकि फसलों को जलभराव एवं सूखे से बचाया जा सके और अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके। किसानों को सलाह दी है कि खाद और उर्वरक का प्रयोग सही मात्रा में करें। फसल की बुवाई के बाद खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई-गुड़ाई करें। रासायनिक खरपतवार नाशक का उपयोग करें, लेकिन सावधानी से और निर्देशों का पालन करें। कीट और रोग प्रबंधन लिए उचित उपाय करें। कीटों और रोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करें और उनके नियंत्रण के कीटनाशक और फफूंद नाशक का उपयोग करें, लेकिन सावधानी से। किसान एक ही फसल पर निर्भर रहने के बजाय विभिन्न फसलों की खेती करें। फसल विविधीकरण से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और जोखिम कम होता है। खरीफ सीजन में धान, मक्का, सोयाबीन, मूंगफली, उड़द, मूंग आदि फसलें प्रमुख हैं। किसान इन फसलों को स्थानीय जलवायु और मिट्टी के अनुसार चुन सकते हैं।

कुंडी टोल प्लाजा पर अवैध वसूली के खिलाफ धरना प्रदर्शन

सड़क अधूरी, फिर भी टोल वसूली जारी, ग्रामीणों का फूटा गुस्सा

बैतूल । कुंडी टोल प्लाजा को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है। अधूरी सडक़ और अधूरी सुविधाओं के बावजूद लगातार की जा रही टोल वसूली को लेकर दो दर्जन ग्रामों के ग्रामीणों ने टोल प्लाजा पर पहुंचकर धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान ग्रामीणों ने एनएचएआई अधिकारी और एसडीएम को ज्ञापन दिया। प्रदर्शन की जानकारी लगते ही मौके पर एसडीएम डॉ अभिजीत सिंह, तहसीलदार टी विश्के, एसडीओपी मयंक तिवारी, नेशनल हाईवे के अधिकारी, थाना प्रभारी मुकेश ठाकुर एवं शाहपुर, बीजादेही, चोपना और सारणी का पुलिस बल बड़ी संख्या में उपस्थित था।

एसडीएम डॉ अभिजीत सिंह ने ग्रामीणों को समझाया, लेकिन ग्रामीण अपनी मांगों पर अड़े रहे। उन्होंने उपस्थित ग्रामीणों को बताया कि उनकी मांगों के संबंध में हाईवे के उच्च अधिकारियों से चर्चा की जाएगी। धरना प्रदर्शन के दौरान एक दिव्यांग ड्राइवर ने प्रशासन से गुहार लगाते हुए कहा कि वह एक ऑटो चालक है। टोल कर्मियों द्वारा ऑटो चालक से भी टोल की वसूली की जा रही है। ग्रामीणों की मांग है कि जब तक नेशनल हाईवे पूर्ण नहीं हो जाता, तब तक टोल टैक्स नहीं लिया जाए। बरेठा घाट पर जगह-जगह गड्ढे हो रहे हैं। हाईवे पर सर्विस रोड, पेड-पौधे, सांकेतिक बोर्ड तक अभी नहीं लगे हुए हैं।

इटारसी से लेकर बैतूल तक छोटी-बड़ी पुल एवं पुलियाएं अधूरी है, जिन्हें तत्काल पूरा किया जाए। ग्राम पंचायत कुंड के सरपंच वीरेंद्र ऊईके का कहना है कि टोल प्लाजा कुंडी ग्राम पंचायत में आता है और पेसा एक्ट लागू है, इसके बावजूद टोल प्लाजा लगाने के संबंध में आज तक किसी प्रकार की कोई अनुमति ग्राम पंचायत से नहीं ली गई। जिस कारण यहां टोल प्लाजा पूर्ण रूप से अवैध है। टोल प्लाजा द्वारा ग्रामीणों को मंथली पास जारी किया जा रहे हैं वह भी गलत तरीके से दिए जा रहे हैं। मासिक पास की समय सीमा एक माह की होना चाहिए, जबकि टोल प्लाजा द्वारा दिए जा रहे हैं पास की अंतिम तिथि 30 तारीख रहती है।

एक अच्छा मार्गदर्शक ही विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखता है : डॉ. विजय साबले

विवेकानंद विज्ञान महाविद्यालय में मनाया गुरु पूर्णिमा पर्व

बैतूल। विवेकानंद विज्ञान महाविद्यालय में गुरु पूर्णिमा पर्व भारतीय परंपराओं के अनुरूप श्रद्धा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती की वंदना और पूजन से हुई, तत्पश्चात स्वामी विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण कर सभी ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

इस अवसर पर महाविद्यालय संचालन समिति के अध्यक्ष डॉ.विजय साबले, समिति सदस्य निर्गुण देशमुख, संजय बालापूरे, कमलेश गड़ेकर और महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर कृष्ण खासदेव मुख्य रूप से उपस्थित रहे। सभी ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की। कार्यक्रम के दौरान समिति सदस्य निर्गुण देशमुख ने कहा कि गुरु का कार्य विषय का ज्ञान देने के साथ ही अपने विद्यार्थियों को नैतिकता और संस्कारों से जोडना भी है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे गुरु के बताए मार्ग पर चलकर सनातन संस्कृति का पालन करते हुए जीवन को सार्थक बनाएं।

अध्यक्ष डॉ.विजय साबले ने अपने वक्तव्य में कहा कि महाविद्यालय के सभी शिक्षकगण अपना सर्वोत्तम योगदान दें ताकि विद्यार्थी अकादमिक रूप से मजबूत बनें, चरित्र निर्माण में भी आगे रहें। उन्होंने कहा कि आज के युग में एक अच्छा मार्गदर्शक ही विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखता है। कार्यक्रम में श्री लहरपुरे ने भी गुरु शिष्य परंपरा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर तुल्य माना गया है और यही परंपरा हमें वैश्विक स्तर पर विशेष बनाती है। पूरे कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर पुष्पक देशमुख ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन प्रोफेसर गायकवाड़ ने किया।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया गुरु पूर्णिमा पर्व

कामथ में निकली ध्वज यात्रा, गायत्री मंदिर में हुआ पांच कुंडीय यज्ञ

बैतूल /मुलताई। नगर मुलताई में गुरु पूर्णिमा का पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। नगर के अनेक मंदिरों में पूजन पाठ और भंडारा प्रसादी का आयोजन किया गया। क्षेत्र में गुरु पूर्णिमा अखाड़ी पर अपने कुल देवताओं के पूजन और दय्यत बाबा को मुर्गा एवं बकरा चलाने की प्रथा है। जिसके चलते आज नगर के अनेक स्थानों पर मुर्गों की बलि दी गई। नगर की सीमा से लगी ग्राम पंचायत कामथ में ग्राम देवता मोग्या बाबा की ध्वज यात्रा निकाल कर विशाल भंडारा प्रसादी का आयोजन किया गया। ताप्ती तट गायत्री मंदिर में पांच कुंडिय गायत्री महायज्ञ कर गुरु पूर्णिमा पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया। आठनेर रोड पर स्थित मरी माता मंदिर में भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर पूजन पाठ किया। पूर्व पार्षद भीवजी पवार ने बताया कि अखाड़ी पर्व पर संपूर्ण नगर के बड़ी संख्या में श्रद्धालु प्रसिद्ध मरी माता मंदिर में पूजन थाल लेकर आते हैं और मरी माता की विशेष पूजा अर्चना के बाद प्रतिवर्ष होने वाले विशाल भंडारा प्रसाद जी में भाग लेते हैं। नेहरू वार्ड नागदेव मंदिर में भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पूजन पाठ किया। इसके अलावा नगर के आरडी पब्लिक स्कूल नागपुर रोड, पोद्दार स्कूल अमरावती रोड, ड्रीम्स प्ले पब्लिक स्कूल मुलताई एवं कोरोला पब्लिक स्कूल में भी गुरु पूर्णिमा के अवसर पर छात्र-छात्राओं अपने गुरुओं की चरण वंदन कर आशीर्वाद लिया और अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

अखाडी के पावन पर्व पर निकाली मोग्या बाबा की ध्वजा यात्रा: मुलताई नगर की सीमा से लगे ग्राम कामथ में प्रति वर्ष अनुसार इस वर्ष भी गुरु पुर्णिमा के पावन पर्व पर मोग्या बाबा सेवा समिति द्वारा ग्राम देवता मोग्या बाबा की ध्वज यात्रा निकली गई जो संपूर्ण ग्राम में भ्रमण करते हुए मोग्या बाबा मंदिर पहुंची जहां प्रतिवर्ष अनुसार विशाल भंडारा प्रसादी का आयोजन किया गया। भीम साहू ने बताया कि मोग्या बाबा को कामथ वासी ग्राम रक्षक देवता मानते हैं जिसके चलते अखाड़ी पर्व पर यहां विशाल ध्वज यात्रा निकाली जाती है जो आकर्षण का केंद्र होती है। इस भव्य आयोजन में मोग्या बाबा मंदिर सेवा समिति के भीम साहू, मनीष चंदेल, मोहन शिवहरे, जिवन डोगरदिये, संतोष पटेल,रवि साहू, संजू साहू , सागर बजरंगी, हेमराज, अलकेश साहू, दिपांशु साहू की भूमिका उल्लेखनीय रही।

पांच कुंडीय गायत्री महायज्ञ कर मनाया गुरु पूर्णिमा

मुलताई। ताप्ती तट पर स्थित गायत्री मंदिर में गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर पांच कुंडिय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया गायत्री परिवार के मुख्य ट्रस्टी यादोराव निंबालकर ने बताया कि शांतिकुंज हरिद्वार के दिशा निर्देशों पर गायत्री परिवार के सैकड़ो भाई बहनों ने माता भगवती देवी शर्मा के जन्म शताब्दी वर्ष 2026 एवं अखंड दीप के शताब्दी वर्ष 2026 के अनुयाज क्रम में गायत्री परिवार के सभी साधक भाई बहनों ने 40 दिवसीय गायत्री महामंत्र अनुष्ठान साधना के साथ गायत्री महामंत्र का नियमित जप करते रहने का संकल्प लिया। तत्पश्चात 5 कुंडिय यज्ञ में राष्ट्र के नव निर्माण ,सुख शांति समृद्धि के लिए आहुतियां समर्पित की गई ,द्यइस अवसर पर गुरु दीक्षा संस्कार सहित पुंसवन ,विद्यारंभ संस्कार करवाए गए,एवं जिन भाई बहनों ने गुरु दीक्षा ,पुंसवन संस्कार करवाएं उन भाई बहनों को पर्यावरण संरक्षण हेतु आम,जाम,आवले के फलदार पौधे भेंट किए गए।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरुवार को उज्जैन के काल भैरव मंदिर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

गुरु पूर्णिमा पर एक लाख श्रद्धालु दादाजी धाम पहुंचे

बागेश्वर धाम-कुबेरेश्वरधाम में श्रद्धालुओं का सैलाब, नरसिंहपुर में श्रद्धालुओं ने किया नर्मदा स्नान

खंडवा/छतरपुर/सीहोर (नप्र)। गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर मध्यप्रदेश के संत समाधियों, गुरुकुलों और आश्रमों में भारी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। उज्जैन के सांदीपनि आश्रम, सीहोर के कुबेरेश्वर धाम, छतरपुर के बागेश्वर धाम और खंडवा के दादाजी धाम मंदिर में पर्व को लेकर विशेष अनुष्ठान हो रहे हैं। छतरपुर के बागेश्वर धाम में गुरु पूर्णिमा महोत्सव बुधवार से ही शुरू हुआ था। गुरुवार को पंडित धीरेंद्र शास्त्री भगवान बालाजी की पूजा अर्चना के बाद श्रद्धालुओं और शिष्यों से मुलाकात की। धाम पर सुंदरकांड और भजन चल रहा था। खंडवा के दादाजी धाम मंदिर में आरती के बाद भक्तों का मेन गेट से प्रवेश बंद किया गया है। इसकी जगह 6 नंबर गेट से प्रवेश शुरू कराया गया है। 6 नंबर गेट पर 40 हजार भक्तों की क्षमता वाला वाटरप्रूफ डोम बनाया गया है। जितने लोग निकल रहे हैं, उससे तीन गुना लोगों का प्रवेश हो रहा है। सीहोर के कुबेरेश्वर धाम में इस बार 10 से अधिक पंडाल और डोम के बाद भी बड़ी संख्या में आ रहे श्रद्धालुओं के लिए जगह कम पड़ रही है। धाम में दोपहर के समय प्रवचन का आयोजन किया जाएगा। वहीं 30 क्विंटल से अधिक नुक्ती का वितरण भोजन प्रसादी के साथ किया जा रहा है। छतरपुर के बागेश्वर धाम में अब तक करीब 1 लाख श्रद्धालु पहुंचे हैं खंडवा के दादाजी धाम मंदिर में दोपहर डेढ़ बजे तक एक लाख श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं। दो लाख श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा कि इस साल 5 लाख से ज्यादा श्रद्धालु दीक्षा लेंगे। पिछले साल साढ़े तीन लाख लोगों ने दीक्षा ली थी ।

सीहोर और सागर में दो कार बहीं

प्रदेश के 14 जिलों में आज अति भारी बारिश का अलर्ट; नर्मदा खतरे के निशान से ऊपर

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में मानसूनी बारिश से मंडला, नरसिंहपुर, उमरिया, शिवपुरी, जबलपुर, रीवा, शहडोल-सागर के साथ ग्वालियर संभाग के कई जिलों में बाढ़ के हालात हैं। आज गुरुवार को 14 जिलों में अति भारी और 22 जिलों में भारी बारिश होने का अलर्ट है। सागर और सीहोर में दो कारें नदी-नाले में बह गईं। प्रदेश के सभी जिलों में पिछले 24 घंटे के दौरान आंधी और बारिश का दौर रहा। सबसे ज्यादा बारिश दमोह में 4.1 इंच हो गई। शिवपुरी में 3 इंच, नौगांव-सतना में 1.8 इंच, टीकमगढ़ में डेढ़ इंच, सागर में 1.1 इंच और रायसेन में 1 इंच बारिश दर्ज की गई। भोपाल में रात में बारिश हुई, जो आधा इंच से ज्यादा रही। दमोह में ड्राइवर ने उफनते नाले से बस को पार कराने की कोशिश की। यूपी के जालौन जा रही बस अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे लटक गई। बस में सवार 6 यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया।

सागर के बंडा क्षेत्र में एक कार उफनते नाले में बह गई। इसमें 3 लोग सवार थे, जिन्होंने कूदकर अपनी जान बचाई। कटनी जिले के बरही थाना क्षेत्र के हदरहटा गांव में धान का रोपा लगाते समय आकाशीय बिजली गिरने से चार लोग झुलस गए। नरसिंहपुर के विपतपुरा गांव में तीन बच्चे नदी में डूब गए। सतना में तेज बारिश से पेड़ गिर गया। इसकी चपेट में आकर कई दोपहिया वाहनों को नुकसान पहुंचा। एक मकान का चबूतरा भी क्षतिग्रस्त हो गया।

ग्वालियर : पॉश कॉलोनियों के घरों में घुसा पानी

ग्वालियर में गुरुवार को आधे घंटे की तेज बारिश का पानी पॉश कॉलोनियों में भी पानी भर गया। निचली बस्तियों के घरों में तो कमर तक पानी भर गया। सड़कों पर वाहनों के पहिए पानी में डूबते नजर आए। शताब्दीपुरम, आदित्यपुरम, डीडी नगर, लधेड़ी, श्रीनगर कॉलोनी, नदी पार टाल, नारायण विहार और सिरोल रोड की निचली बस्तियों में घुटनों से लेकर कमर तक पानी

भर गया था। रॉकी पुल, न्यू जीवाजी नगर, सिटी सेंटर सहित शहर की अन्य कॉलोनियों और गली-मोहल्लों में भी जलभराव हो गया था। लोगों का कहना है कि बारिश होते ही गली, मोहल्ले और कॉलोनियों में हर बार ऐसे ही हालात हो जाते हैं। इससे पहले बुधवार को सबसे खराब स्थिति लक्ष्मीगंज स्थित जागृति नगर की रही। लोग अपने-अपने घरों से पानी निकालने में जुटे थे। शहर की तीन गलियों के करीब 50 घरों में सुबह का नाश्ता और दोपहर का खाना तक नहीं बन पाया। गुरुवार सुबह रिमझिम के साथ तेज बारिश हुई, जिससे शहर के कई इलाकों में पानी भर गया।

सीहोर : नाले में कार बही, कार सवार लोग सुरक्षित

सीहोर जिले की रेहटी तहसील में गुरुवार को एक कार धामंडा नाले में बह गई। बाढ़ का पानी पुल के ऊपर से बह रहा था। कार में गोपालपुर निवासी आकाश (30) और राला निवासी नरेंद्र (35) सवार थे। दोनों बमुश्किल बाहर निकल सके। अब दोनों सुरक्षित हैं। कार नसरुल्लागंज तहसील क्षेत्र की बताई जा रही है।

मैहर में सड़कों पर भरा पानी

मैहर गुरुवार को दोपहर 2 बजे के बाद तेज बारिश होने लगी। जिससे रेलवे स्टेशन रोड पर पानी भर गया। मंडला में 23 दिन में 61 प्रतिशत बारिश, 7 की मौत, 210 गांवों में भरा पानी मंडला जिले में 18 जून से अब तक 810 मिमी यानी 31.87 इंच बारिश हो चुकी है। यह वार्षिक औसत 1326.2 मिमी (52.21 इंच) का 61 प्रतिशत है। बाढ़ की चपेट में आए 210 गांवों में जनजीवन अस्त-व्यस्त है। नदी-नालों को पार करते समय बहे 9 में से 7 लोगों की मौत हो चुकी है। 2 लोग अभी भी लापता हैं, जिनकी तलाश में एसडीईआरएफ की टीमें लगी हैं।

ये गांव सबसे ज्यादा प्रभावित

बिछिया, बीजाडांडी, नारायणगंज, निवास और मंडला क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। बिछिया के अंजनिया, माधोपुर, मरारटोला, करियागांव, जगन्नाथ, भलवारा और बीजाडांडी के बरौची, पीपलधर, तुमती, विजयपुर गांवों में बड़ा नुकसान हुआ है।

सीहोर में तेज बारिश से सड़क में गड्ढे हुए: सीहोर में तेज बारिश के चलते सड़कों की हालत भी खराब होने लगी है। शहर में रेलवे स्टेशन जाने वाली रोड का बड़ा हिस्सा गड्ढे में तब्दील हो गया है।

दतिया में नाले में बहा ऑटो रिक्शा, ड्राइवर को बचाया: दतिया में रिछरा फाटक इलाके का नाला सुबह हुई बारिश से उफान पर आ गया। पानी के बहाव में ऑटो रिक्शा फंस गया। स्थानीय लोगों ने मदद कर ड्राइवर को बाहर निकाला।

5 करोड़ की सरकारी जमीन से अवैध कब्जा हटाया

भोपाल-अनंतपुर में प्रशासन की बड़ी कार्रवाई; नोटिस के बाद भी नहीं माने तो प्रशासन ने तोड़ा निर्माण

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अनंतपुर में गुरुवार को जिला प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की। हुजूर एसडीएम विनोद सोनकिया की मौजूदगी में अमले ने सरकारी जमीन पर खड़े पक्के निर्माण को जमींदोज कर दिया। कब्जा मुक्त कराई गई जमीन की कीमत 5 करोड़ रुपए बताई जा रही है। तहसीलदार अनुराग त्रिपाठी ने कब्जा हटाने के आदेश दिए थे। कार्रवाई के दौरान भारी पुलिस बल भी तैनात किया गया। ताकि, हंगामा होने पर सख्ती से निपटा जा सके। पुलिस ने सड़क के दोनों ओर से बेरिकेडिंग भी की थी।

नोटिस देने के बावजूद निर्माण नहीं तोड़ा

इस मामले में तहसीलदार त्रिपाठी ने नोटिस भी जारी किया था। बावजूद निर्माण नहीं तोड़ा गया। सोहेल अहमद निवासी अनंतपुर का जमीन पर कब्जा था। 3 हजार स्क्वायर फीट जमीन पर ग्राउंड और फर्स्ट फ्लोर का व्यवसायिक निर्माण कर कब्जा किया था।

सड़क किनारे ही बनाया निर्माण

अनंतपुर की मुख्य सड़क पर ही पक्का निर्माण किया गया था। इसे लेकर शिकायत भी हुई थी। जिसके बाद एसडीएम, तहसीलदार समेत पुलिस अमले ने यह कार्रवाई की।

चार बच्चों को काटने के बाद डॉग की मौत

बच्चे जिला अस्पताल रेफर, ग्रामीण बोले- डॉग को बांधा, कुछ देर बाद उसने दम तोड़ा

सतना (नप्र)। सतना के नागौद ब्लॉक में गुरुवार को एक स्ट्रीट डॉग ने चार बच्चों को काट लिया। परिजन बच्चों करे लेकर नागौद के सिविल अस्पताल गए, जहां उन्हें एंटी रैबीज इंजेक्शन लगाकर सतना रेफर किया गया। वहीं घटना के बाद स्ट्रीट डॉग की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, ब्लॉक के श्यामनगर गांव में 6 वर्षीय सत्यम कोल, 10 वर्षीय जितेंद्र कुशवाहा, 8 वर्षीय रौनक चौधरी और 2 वर्षीय सिद्धू कोल घर के बाहर खेल रहे थे।

परिजनों ने बताया कि इस दौरान सुबह करीब 8 बजे अचानक एक पागल स्ट्रीट डॉग ने एक के बाद एक चारों को काट लिया। परिजन घायल बच्चों को तत्काल नागौद के सिविल अस्पताल ले गए। उनका आरोप था कि तुरंत मौके पर पहुंचने के बावजूद अस्पताल 11 बजे तक बंद रहा। इस कारण इलाज में तीन घंटे की देरी हुई। इसके बाद डॉक्टरों ने बच्चों को एंटी रैबीज इंजेक्शन लगाया।

घावों के बेहतर इलाज के लिए उन्हें सतना जिला अस्पताल रेफर किया गया। इसके बाद परिजन घायल सिद्धू और सत्यम कोल को लेकर शाम को सतना जिला अस्पताल पहुंचे। दोनों बच्चों को भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है। परिजनों ने बताया कि दोपहर में नागौद में बारिश होने की वजह से वे वही रुक गए थे। इधर ग्रामीणों ने घटना के बाद स्ट्रीट डॉग को पकड़कर बांध दिया था। कुछ समय बाद उसकी मौत हो गई।

भदभदा क्षेत्र से 3 महीने में हटेगा अतिक्रमण

एनजीटी की सेंट्रल बेंच ने दिए आदेश; बरखेड़ा सालम में 5 एकड़ से कब्जा हटाया

भोपाल (नप्र)। भोपाल स्थित बड़ा तालाब के भदभदा क्षेत्र के चिह्नित अतिक्रमण को 3 महीने के अंदर हटाया जाएगा। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) की सेंट्रल जोन बेंच ने यह आदेश दिए हैं। नगर निगम ने भदभदा से पूर्व में अतिक्रमण मुक्त कराई गई भूमि पर फेसिंग एवं पौधारोपण के बारे में जानकारी भी एनजीटी को दी। एनजीटी की सेंट्रल जोन बेंच भोपाल ने आर्या श्रीवास्तव विरुद्ध यूनियन बैंक ऑफ इंडिया एवं अन्य के प्रकरण के संबंध में सुनवाई करते हुए बड़ा तालाब के भदभदा क्षेत्र में चिह्नित अतिक्रमणों पर आगामी 3 माह में कार्रवाई करने के निर्देश दिए। निगम की ओर से एनजीटी को अवगत कराया गया कि तालाब क्षेत्र के आसपास अमृत 1.0 योजना के अंतर्गत सीवेज संबंधी कार्यों और अमृत 2.0 योजना में बड़े तालाब के अनुपचारित जल के लिए की जा रही कार्रवाई, भदभदा क्षेत्र से पूर्व में मुक्त कराई गई भूमि पर फेसिंग एवं पौधारोपण कराया गया। सुनवाई में कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह और निगम कमिश्नर हरेंद्र नारायन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए जुड़े रहे, जबकि वादी एवं प्रतिवादी पक्ष के वकील समक्ष में उपस्थित रहे।

7 करोड़ रुपए की सरकारी जमीन मुक्त कराई: इधर, हुजूर तहसीलदार अनुराग त्रिपाठी की मौजूदगी में बुधवार को अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई। ग्राम बरखेड़ा सालम में शासकीय भूमि लगभग 5 एकड़ से अतिक्रमण हटाया गया। इस भूमि की बाजारू कीमत करीब 7 करोड़ रुपए है।

पंजाब मेल के वॉशरूम में गंदा पानी

यात्री बोले- पानी हाथ-मुंह धोने लायक भी नहीं; भोपाल से मुंबई जा रहे थे

भोपाल (नप्र)। भोपाल से गुजरने वाली पंजाब मेल ट्रेन के वॉशरूम में गंदे पानी की सप्लाई का वीडियो सामने आया है। इस मामले में एक यात्री ने रेलवे से शिकायत की है। उन्होंने बताया कि बदबूदार और गंदा पानी हाथ-मुंह धोने लायक भी नहीं है। भोपाल निवासी यात्री संजय शर्मा 9 जुलाई की शाम 4.35 बजे भोपाल स्टेशन पर पंजाब मेल से मुंबई रवाना हुए थे। उन्होंने ही यह वीडियो बनाया है। मामला भोपाल सांसद आलोक शर्मा के संज्ञान में भी आया।

भोपाल या इटारसी में भरा गया पानी: यात्री संजय ने बताया, यह वीडियो 10 जुलाई की सुबह बनाया। जब वे वॉशरूम में गए तो बेहद बदबूदार और गंदा

पानी नल से आ रहा था। इस पानी को मैंने एक खाली बॉटल में भरा। जिसका वीडियो बना लिया। संभवतः भोपाल या इटारसी स्टेशन से ट्रेन में पानी भरा गया है। भोपाल स्टेशन से रोज दर्जनों ट्रेनें गुजरती हैं। प्रति ट्रेन में 1000 से 1200 यात्री सफर करते हैं। कई लोग तो पीने के लिए सीलबंद पानी की बॉटल का उपयोग करते हैं, लेकिन सैकड़ों यात्रियों को मजबूरन ही गंदे पानी का उपयोग करना पड़ता है। ऐसे में उन्हें गंभीर बीमारियां होने का खतरा रहता है।

जहां से पानी भरा, वहां हो टेस्टिंग

यात्री शर्मा ने बताया कि इस मामले में रेलवे के उच्च अधिकारियों से शिकायत की है। मांग की है कि जो भी दोषी हो, उस पर कड़ी कार्रवाई की जाए। साथ ही भोपाल, इटारसी स्टेशन में भरे जाने वाले पानी की जांच की जाए। टेस्टिंग से तस्वीर साफ हो जाएगी।

शहरी विकास के नए अध्याय की शुरुआत

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव

भविष्य के शहरों का निर्माण

11 जुलाई, 2025 । पूर्वाह्न 10:00 बजे | ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर, इंदौर

शुभारंभ

मुख्यमंत्री

डॉ. मोहन यादव

द्वारा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन के अनुरूप मध्यप्रदेश के शहरों में इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित हो रहा है। इससे बढ़ती नगरीय जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। समृद्ध और विकसित शहर, प्रदेश के समावेशी विकास की आधारशिला बनेंगे।

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

प्रमुख आकर्षण

- 1500 से अधिक प्रतिभागी
- एक्सपो (आमजन के लिए सायं 5:30 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक)
- वन-टू-वन मीटिंग

फोकस सेक्टर

- रियल स्टेट
- इन्फ्रास्ट्रक्चर
- पर्यटन
- होटल इंडस्ट्री

पैनल चर्चा

- अर्बन टेक
- अर्बन ग्रीन्स
- अर्बन मोबिलिटी
- अर्बन इन्फ्रा ड्राइव

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP jansamparkMP

D-11062/25